आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय

विश्वनवनिर्माण की अनूठी ईश्वरीय योजना

मैं कौन?

शरीर अलग चीज़ है,आत्मा अलग चीज़ है और दोनों मिलकर जीवआत्मा बनती है– 'जीवित आत्मा' जीवित आत्मा माना शरीर के अंदर काम करने वाली चैतन्य शक्ति। नहीं तो ये आत्मा भी काम नहीं कर सकती। ये शरीर भी नहीं काम कर सकता।इसकी मिसाल एक मोटर और ड्राइवर से दी हुई है। जैसे मोटर होती है, ड्राइवर उसके अन्दर है तो मोटर चलेगी।
ड्राइवर नहीं है तो मोटर नहीं चलेगी। मतलब ये है कि आत्मा; भाई ने कहा – वायु है द्ध वायु नहीं है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश ये तो पॉच तत्व अलग हैं जिनसे ये शरीर बना है। आत्मा निकल जाती है तो भी शरीर के अन्दर पॉच तत्व रहते हैं। उनको जलाया जाता है या मिट्टी में दबाया जाता है। वो तो जड़ तत्व है; लेकिन आत्मा उनसे अलग क्या चीज़ है ? वो मन और बुद्धि स्वरूप एक अति सूक्ष्म ज्योतिर्बिन्दु है। जिसको गीता में कहा गया है ''अणोरणीयांसमनुस्मरेत् यः'' – मलतब अणु से भी अणुरूप बताया। अणु है; लेकिन ज्योर्तिमय है। वो ज्योर्तिमय अणु जो है उसमें अनेक जन्मों के संस्कार भरे हुए हैं – मन ,बुद्धि के अंदर। मन, बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। एक वेद की ऋचा में भी बात आई है, 'मनरेव आत्मा' – मन को ही आत्मा कहा जाता है। आदमी जब शरीर छोड़ता है, आत्मा शरीर छोड़ती है तो ये थोड़े ही कहा जाता है कि मन,बुद्धि रह गई और आत्मा चली गई। सब कुछ है; लेकिन मन, बुद्धि की जो शक्ति है वो चली गई। माना आत्मा चली गई। तो मन, बुद्धि की पॉवर जो है वास्तव में उसका दूसरा नाम आत्मा है। मन, बुद्धि मे इस जन्म के और पूर्व जन्म के संस्कार भरे हुए हैं। संस्कार माना अच्छे–बुरे जो कर्म किए जाते हैं, उन कर्मों का जो प्रभाव बैठ जाता है उसको कहते हैं – संस्कार। जैसे किसी परिवार में कोई बच्चा पैदा हुआ ,कसाइयों का परिवार है,बचपन से ही वहां गाय काटी जाती है, उस बच्चे से, जब बड़ा हो जाय, पूछा जाय कि तुम गाय काटते हो बड़ा पाप होता है। तो उसकी बुद्धि में नहीं बैठेगा।उसके संस्कार ऐसे पक्के हो गये। उसी तरीके से ये संस्कार जो है वो एक तीसरी चीज़ है। तो मन,बुद्धि और संस्कार ये तीन शक्तियॉ मिलकर के आत्मा कही जाती हैं।

तीन लोक

आत्मा इस सृष्टि में आई कहॉ से ? ये कीट,पशु,पक्षी पतंगे ये सब आत्मायें हैं। सबके अन्दर आत्मा है। इस चित्र में ये है पृथ्वी, ये है सूरज, चॉद, सितारे, आकाशतत्व। गीता में एक श्लोक और है, उसमें अर्जुन को भगवान ने ये बताया है कि मैं कहॉ का रहने वाला हूँ ? 'न तद् भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद् धामो परमं मम।'
माना जहॉ सूरज,चॉद,सितारों का प्रकाश नहीं पहुँचता,जहां अग्नि का प्रकाश नहीं पहुँचता, जहॉ चन्द्रमा का प्रकाश नहीं पहुँचता वो मेरा परे ते परे धाम है जहॉ का मैं रहने वाला हूँ। गीता का पूरा का पूरा श्लोक इस बात पर है कि परमात्मा कहॉ का रहने वाला है। ये यहॉ साबित किया गया है कि पॉच तत्वों की दुनियॉ से परे एक और छठा तुरीया तत्व है 'ब्रह्मलोक' जिसे अंग्रेजों में कहा जाता है 'सुप्रीमएबोड'। मुसलमानों में इसे कहा जाता है 'अर्श'। 'खुदा अर्श में रहता है फर्श में नहीं'; लेकिन अब तो वो भी सर्वव्यापी मानने लगे हैं। जैनी लोग जो हैं वो उसको 'तुरीया धाम' मानते हैं। माना हर धर्म में उस धाम की मान्यता है।हम सब आत्माएं वहॉ की रहने वाली हैं। वहां पर ही सुप्रीम सोल है जिसे हम हिन्दुओं में कहते हैं 'शिव'। वो जन्म–मरण के चक्र से न्यारा है। बाकी सब जितनी भी आत्माएं हैं वो जन्म–मरण के चक्र में आ जाती हैं। क्रम क्या है? जितना ही श्रेष्ठ कर्म करने वाली आत्मा है वो उतना ही परे ते परे शिव के नजदीक रहने वाली होगी और जितने ही इस सृष्टि पर आकर के निष्कृष्ट कर्म करने वाली आत्मायें हैं, पार्ट बजाने वाली हैं वो

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

सब नीचे–नीचे की ओर। उनकी संख्या जास्ती होती है। दुष्ट कर्म करने वालों की संख्या जास्ती और श्रेष्ठ कर्म करने वाली देव आत्माओं, जो 33 करोड़ कही जाती हैं उनकी संख्या कम। वो श्रेष्ठ आत्माएं जिनकी संख्या ऊपर 2 कम है।
जब सतयुग से नई सृष्टि का आवर्तन होता है तो त्रेता थोड़ा पुराना हो जाता है, द्वापर थोड़ा और पुराना हो जाता है और कलियुग बिल्कुल ही पुराना हो जाता है। दुनियॉ की हर चीज़ चार अवस्थाओं से गुजरती है। सतोप्रधान बचपन, सतोसामान्य किशोर अवस्था, रजोप्रधान जवानी और बुढ़ापा और खलास। सृष्टि का भी यही नियम है।ये चार अवस्थाओं से पसार होती है। सतोप्रधान सृष्टि को सतयुग कहा जाता है, रजोप्रधान को द्वापर कहा जाता है और तमोप्रधान को कलियुग कहा जाता है। ब्रह्मलोक से आत्माओं के उतरने का यही क्रम है कि जितनी श्रेष्ठ आत्मायें हैं उतना ही श्रेष्ठ युग में उतरती हैं। जो 16 कला सम्पूर्ण आत्माएं हैं वो सतयुग में उतरती हैं। जो 14 कला सम्पूर्ण आत्माएं हैं वो त्रेतायुग में उतरती हैं। जो 8 कला सम्पूर्ण आत्माएं हैं द्वापर में उतरती हैं और कलियुग से कलाहीनता शुरू हो जाती है। वो कलाहीन आत्माएं जो दूसरों को दुःख देना ही जिनका धर्म है,जिनके लिए गीता में आया है 'मूढ़ा जन्मनि जन्मनि'। नारकीय योनी में आकर गिरती हैं। वो आत्माएं कलियुग के अन्त में आती हैं जब सारी ही आत्माएं नीचे उतर आती हैं। उनको वापस जाने का रास्ता नहीं मिलता।यहीं जन्म–मरण के चक्र में आती रहती हैं, चक्र काटती रहती हैं और वो आत्माएं जन्म–मरण के चक्र काटते–काटते ,शरीर से सुख भोगते– भोगते तामसी बन जाती हैं। बीज है, कई बार बोया जायेगा तो उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है। पत्ता छोटा, फल छोटा, वृक्ष छोटा और आखरीन होते–होते वह फल देना ही बन्द कर देता है। तो ऐसे ही आत्माओं का ये हिसाब है कि जब एक बार ऊपर से नीचे आ गईं तो वो नीचे ही उतरती जाती हैं। आप इस सृष्टि की 2500वर्ष की हिस्ट्री ले लीजिए। दुनियॉ में सुख–शान्ति,अशान्ति के रूप में बदलती गई है या दुःख और अशान्ति कम होती गई ? हिस्ट्री क्या कहती है? जनसंख्या जैसे–जैसे बढ़ती गई ऊपर से आत्माएं उतरती गईं। तो जनसंख्या के बढ़ने से सृष्टि में दुःख और अशान्ति तो बढ़नी ही बढ़नी है,वो बढ़ती गई।एक इंतहा होती है जब सारी की सारी आत्माएं नीचे उतर आती हैं, दुनियॉ में हमेशा कीट, पशु–पक्षी, पतंगो की जनसंख्या बढ़ रही है। देश–विदेश में इतनी कीटनाशक दवाइयॉ छिड़की जा रही हैं; लेकिन उनकी संख्या लगातार बढ़ती चली जा रही है। मच्छरों की,मक्खियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है तो फिर आखिर ये आत्माएं कहॉ से आ रही हैं उसका समाधान गीता के अनुसार ही है; लेकिन क्लीयर किसी ने नहीं किया। अभी ये बात क्लीयर हो रही है कि ये आत्मायें उस लोक से आ रही हैं और इसी दुनियॉ में जन्म –मरण के चक्र काटते – काटते अपना पार्ट बजाती रहती हैं।

परमपिता परमात्मा और उनके दिव्य कर्तव्य

जब सारी ही आत्माएं उतरने को होती हैं तब अन्त में परमात्मा शिव इस सृष्टि पर आता है और आकर के इस सृष्टि रूपी रंगमंच की जो हीरो–हीरोईन पार्टधारी आत्माएं हैं। कोई तो होंगी। अच्छे– बुरे पार्टधारी तेा होते ही हैं। तो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कोई तो सबसे ज्यादा श्रेष्ठ पार्ट बजाने वाले होंगे। उनको अंग्रेजों में कहा जाता 'एडम' और 'ईव' सृष्टि के आदिपुरूष। मुसलमानों में उनको कहा जाता है 'आदम' और 'हव्वा' और हिन्दुओं में कहा जाता है ''त्वमादिदेवः पुरूषः पुराणः। त्वमस्य विश्वस्य परमं निधानम्।' ; शंकर–पार्वतीद्ध''। उनका ओरिजिन किसी ने नहीं बताया कि वो आदिशक्ति और आदिदेव कब से हैं। उनको जन्म देने वाला कौन है? किसी को पता ही नहीं है। अपने हिन्दु परम्परा में 'शंकर–पार्वती' और जैनियों में उनको कहा जाता है'आदिनाथ और आदिनाथिनी'। देखिए आप, शब्दों में कितना साम्य है। पहले दुनियॉ में एक ही धर्म था और एकता थी। वो एकता तभी आ सकती है कि जब सारी दुनियॉ का मॉ– बाप एक

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

हो। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की असली भावना तभी हो सकती है जबकि सारी दुनियॉ में एक ही मात–पिता हो। तो वो परमात्मा आता है, आकर के जो रंगमंच के हीरो–हिरोईन पार्टधारी राम–कृष्ण की आत्माएं हैं,उनको उठाता है। वो राम–कृष्ण के रूप में तो नहीं होते; क्योंकि कृष्ण–नारायण राज्य तो सतयुग में था। राम का राज्य त्रेता में था। वही आत्माएं जन्म–मरण के चक्र में नीचे उतरते–उतरते हमारे आपके रूप में कहीं ना कहीं नर रूप में हैं।उन नर रूप में परमात्मा शिव प्रवेश करता है। जैसे गीता में एक शब्द आया ह''प्रवेष्टुम्'– मैं प्रवेश करने योग्य हूॅ। कौन? वो सुप्रिम सोल, जो जन्म–मरण के चक्र से न्यारा है वो प्रवेश करके कृष्ण वाली सोल के द्वारा पहले मॉ का पार्ट बजाता है। जिसका नाम अपनी भारतीय परम्परा में रखा जाता है 'ब्रह्मा'। ब्रह्मा माने बड़ी और मॉ माने मॉ। दुनियॉ में सबसे जास्ती सहन करने वाली मॉ होती है। परमात्मा भी इस सृष्टि पर आकर मॉ का पार्ट बजाता है जिसके लिए अपने भारतीय परम्परा में परमात्मा की महिमा के गीत गाये हैं,उसमें कहा है – 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव .....'। माने वो सबसे पहले इस सृष्टि पर आकर ब्रह्मा के रूप में मॉ का पार्ट बजाता है। इतना प्यार देता है,इतना प्यार देता है कि जो असुर हैं वो उससे वरदान लेने के आदी हो जाते हैं। मॉ की ये हालत होती है कि कोढ़ी, काना, कुब्जा, चोर, डकैत, लुच्चा, लफंगा बच्चा होगा उसको भी अपनी गोद से अलग नहीं करना चाहेगी। बाप कहेगा – 'हट्ट निकल बाहर'; लेकिन मॉ गोद से अलग नहीं करना चाहेगी। ऐसे ही ब्रह्मा का जो पार्ट है वो इस सृष्टि पर पहले है।

परमात्मा शिव उसमें प्रवेश करके जो वाणी चलाते हैं उस वाणी का नाम पड़ता है – 'मुरली'। मुरली नाम क्यों ? हम और आप जानते हैं कि कृष्ण के हाथ में मुरली दिखाई जाती है। तो हमने ये समझ लिया कोई बॉस की मुरली होगी; लेकिन ये तो प्रतीकात्मक, लाक्षणिक और आलंकारिक कवियों की भाषा है वो उन्होंने भागवत में लिखी हुई है, महाभारत में लिखी हुई । उसका वास्तविक अर्थ ये है कि परमात्मा ब्रह्मा के मुख से माने कृष्ण की सोल के द्वारा पहले2 इस सृष्टि पर आकर जो प्यार देता है, मीठी वाणी सुनाता है वो मीठी वाणी इतनी अच्छी लगती हैं कि जब लोगों को समझ में आ जाती है कि ये बात क्या है? तो उससे ज्यादा बढ़कर मीठी और सुरीली तान कोई है ही नहीं। इसलिए उसका नाम रखा गया मधुर गीता, गीता अथवा सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ, जो भारत का सर्वोपरी ग्रंथ है 'सर्वशास्त्र शिरोमणी गीता' उसको 'मुरली' कहा जाता है। तो मुरली द्वारा परमात्मा आकर ब्रह्मा के द्वारा ये ज्ञान सुनाता है। मॉ के रूप में वो ब्राह्मणों को जन्म देता है। हम समझते हैं कि शास्त्रों में लिखा हुआ है ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले। तो समझते हैं कोई ऐसी कलाकारी मुॅह में होगी कि उन्होंने मुॅह से 'हुआ' किया और ब्राह्मण निकल पड़े; लेकिन ऐसा कुछ नहीं होता। यही पुरानी सृष्टि होती है। इसी पुरानी सृष्टि में परमात्मा आकर ब्रह्मा के रूप में प्रवेश करके जो ज्ञान सुनाता है उस ज्ञान को सुनकर जो अपने जीवन को बनाते हैं, सुधारते हैं, उन्हीं में ब्राह्मणों के संस्कार आ जाते हैं। तो ब्राह्मणों की जो उत्पत्ति होती है जिनको ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी कहा जाता है। ये सृष्टि के ओरिजिन; शुरूवात द्ध की बात है जो अभी पुनरावर्तन हो रही है।

माउंट आबू से इस कार्य की शुरूवात हुई। शिव गुप्त रूप में आता है।जैसे गीता में कहा है, 'साधारण तन में आए हुए मुझ परमात्मा को मूढ़मती लोग पहचान नहीं पाते'। तो ये जो आपको ब्रह्मा का रूप दिखाया ये व्यक्तित्व प्रैक्टिकल में हो चुका है। माउंट आबू में इनके द्वारा परमात्मा शिव ने ब्राह्मण धर्म की स्थापना कराई थी। इनका नाम दादा लेखराज था। सिंध हैद्राबाद के रहने वाले ये सिंधी ब्राह्मण थे। जिनके द्वारा ये कार्य सम्पन्न हुआ। अभी तो देश–विदेश में ढेर सारे ब्रह्माकुमारी आश्रम खुले हुए हैं। 60 साल के अंदर इतनी जबरदस्त स्थापना करना समान्य बात तो नहीं है। परमात्मा शिव, कृष्ण की सोल दादा लेखराज का नाम 'ब्रह्मा' देता है और उसके द्वारा जब

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

ब्राह्मण धर्म की स्थापना करता है तब ढेर सारे ब्रह्माकुमार–कुमारियॉ तैयार हो जाते हैं।परमात्मा देखता है कि इन ब्राह्मण बच्चों में ही दो किस्म के बच्चे पैदा हुये हैं। एक रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद भी ब्राह्मण थे और अपने जीवन में गुरू वशिष्ठ,विश्वामित्र ने भी ब्राह्मणत्व अपनाया है। गुरू वशिष्ठ,विश्वामित्र जैसों की संख्या थोड़ी हो जाती है और रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाद जैसों की संख्या ढेर सारी हो जाती है। तो यही बात ब्रह्माकुमारी आश्रम में भी हुई।

ब्रह्मा से जो पैदा हुए ब्रह्मा वत्स हैं उनमें ढेर सारे दुष्ट ब्राह्मण पैदा हो गये और जो ज्ञान,योग में ज्यादा रस लेने वाले हैं,त्यागी,तपस्वी हैं,वो थोड़े रह गये। लिहाजा क्या होता है,परमात्मा को वो शरीर छोड़ देना पड़ता है।कृष्णवाली सोल माना ब्रह्मा की सोल को शरीर छोड़ देना पड़ता है। उसके बाद 69 में परमात्मा राम वाली सशक्त आत्मा में सर्वथा गुप्त प्रवेश करता है; क्योंकि माता का भी प्यार भरा पार्ट उसी शिव का है तो पिता का भी सख्त पार्ट उसका है; लेकिन 'टेढ़ी उंगली किये बगैर घी नहीं निकलता है'। अब राम वाली सोल कहीं न कहीं तो इस सृष्टि पर होगी ना? तो उस व्यक्तित्व में जो कि आलरेडी पहले से ही ब्रह्माकुमार बनी हुई होती है उसमें प्रवेश करके वो शिव ही अपना कार्य आरम्भ करता है। ये कार्य के आरम्भ होने के बाद थोड़े समय के अन्दर ही ब्रह्माकुमारी संस्था में सन् 76 से स्पष्ट विभाजन नज़र आता है। जैसे सभी धर्मों में हुआ। बौध्दियों में 'हीनयान', 'महायान' दो सम्प्रदाय हो गये। जैनियों में 'श्वेताम्बर' और दिगम्बर' दो सम्प्रदाय हो गये। मुसलमानों में 'शिया' और 'सुन्नी' दो सम्प्रदाय हो गये, क्रिश्चियन्स में 'रोमन कैथोलिक' और 'प्रोटेस्टेंट' दो सम्प्रदाय हो गए। तो ये दूसरे जो भी धर्म हैं उन–उन सबने उस परमात्मा को ही फॉलो किया।

अब परमात्मा ने जब आकर नये सनातन धर्म की स्थापना की तो भी यही प्रक्रिया चली कि ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के कुछ समय बाद उस ब्रह्माकुमारी आश्रम में दो तरह के लोग स्पष्ट नजर आते हैं। तो आपस में टकराव पैदा होता है। बुद्धिजीवियों की संख्या कम होती है और वो अलग हो जाते हैं। तो संघर्ष तो बढ़ेगा। हर धर्म में ये संघर्ष बढ़ते–बढ़ते चर्मउत्कर्ष रूप पैदा होता है। गुरुओं का जो बड़ा वर्ग है वो सच्चाई को नहीं पहचानता; क्योंकि उनको तो गद्दी मिली हुई है। वो माउंटआबू में अभी भी काबिज है। उस सच्ची बात को सुनते नहीं है; लेकिन आप देखेंगे कि जो कुछ भी वाणी सुनाई है वो वाणी शतशह अपनी जगह पर शास्त्रसंगत है; लेकिन ब्रह्माकुमारियॉ आज भी ये बात कह रही हैं कि शास्त्र सब झूठ हैं और हमारे बाबा ने जो कुछ बोला है वो ही सच्चा है; लेकिन बाबा ने जो कुछ बोला है उसका अर्थ क्या है ? वो उन्हें पता ही नहीं है और सुनने के लिए भी तैयार नहीं हैं। हर धर्म में ये स्थिति पैदा होती रही है।

इस तरीके से शंकर; राम वाली आत्मा ब्रह्म के द्वारा जो त्रेतायुग में भी होती है, वो ही जन्म–मरण के चक्र में आते– आते कलियुग अन्त में साधारण मानव तन होता है उसमें प्रवेश करके परमात्मा शंकर के नाम–रूप से संसार में धीरे –धीरे प्रत्यक्ष होना शुरू होता है। ब्रह्म शंकर का सख्त पार्ट है। सख्त पार्ट के द्वारा परमात्मा ब्राह्मणों के सम्प्रदाय में दो फाड़े कर देता है। कुछ चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माएं निकलती हैं। आपने देखा होगा शंकर जी के बाहों में माला दिखाते हैं। गले में भी कई तरह की मालाएं पड़ी हुई हैं। माला,संगठन की निशानी होती है।एक प्यार के सूत्र में और ज्ञान के सूत्र में वो मणके रूपी आत्माएं पिरोई गई हैं। उनका संगठन तैयार किया गया है। वो संगठन सारे संसार में मान्यता प्राप्त करता है। किस रूप में ?आप देखेंगे मुसलमानों में भी माला घुमाई जाती है। क्रिश्चियन्स में भी माला घुमाई जाती है।बौध्दि लोग भी माला घुमाते हैं। सिक्ख लोग भी माला घुमाते हैं। ये माला का इतना महत्व क्या है जो हर धर्म में घुमाई जाती है – ये कोई नहीं जानता। बाबा ने मुरली में बताया है कि बच्चे,ये माला के मणके तुम आत्माओं की यादगार है।

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

जब परमात्मा आता है तो तुम आत्मा रूपी मणकों को इकट्ठा करता है और श्रेष्ठ आत्माओं का जो संगठन तैयार होता है वो सारे संसार में तहलका मचाता है। पहले भारतवर्ष में ब्राह्मणों की दुनियॉ के अन्दर तहलका शुरू होता है।

कल्पवृक्ष

माला के संगठन में 108 मणके होते हैं। आप देखेंगे दुनियॉ में आज खास–खास 9 धर्म फैले हैं। हिन्दु धर्म तो बहुत पुराना है। उसमें से दो फाड़े ऐसे हैं, जो कभी दूसरे धर्म में कनवर्ट नहीं होते और दूसरे ऐसे हैं कि जो कनवर्ट होते ही रहे। मुसलमान आये तो मुसलमानों में कनवर्ट हो गये, क्रिश्चियन्स आये तो क्रिश्चियन्स में कनवर्ट हो गये, सिक्ख आये तो सिक्ख में कनवर्ट हो गये। माना सनातन धर्म में दो प्रकार के वर्ग हो गये। एक नॉन कनवर्टेड जो कभी कनवर्ट नहीं हुए। भले किसी भी तरह की कोई परीक्षा आई अपने धर्म को छोड़ा नहीं। दूसरे वह जो कनवर्ट होते ही रहे एक से दूसरे धर्म में, दूसरे से तीसरे धर्म में,तीसरे से चौथे धर्म में। आज से 2500 वर्ष पहले 'इस्लाम धर्म' आया। फिर चौथा 'बौद्ध धर्म ' आया। चीन,जापान,बर्मा मलाया में फैला। पॉचवा 'क्रिश्चियन धर्म' आया जो युरोपीय देशों में फैला।अमेरिका में फैल गया। छठा शंकराचार्य का 'सन्यास धर्म' लाल–पीले, सफेद कपड़े पहनकर निकला। उसके बाद मुहम्मद जिन्होंने इस्लाम धर्म के फाड़े करके मूर्तिपूजा बंद करवा दी और 'मुस्लिम धर्म ' फैलाया। उसके बाद गुरू नानक आये और गुरूनानक ने मुसलमानों से टक्कर लेने के लिए भारत के ही अच्छे–खासे, हट्टे–कट्टे कम बुद्धिवाले जो सनातन धर्म के लोग थे, उनको कनवर्ट करके उन्हें सिक्ख बना दिया और वे मुसलमानों से ,क्रिश्चियन्स से टक्कर लेते रहे। टोटल मिलाकर अन्त में 'आर्य समाज' एक ऐसा धर्म आता है जो सबको आहूत करता है कि तुम सब आकर के भारतवर्ष में इकट्ठे हो जाओ।कोई भी धर्म का हो हम उसे हिन्दु बना देंगे। हिन्दुओं ने तो कभी विधर्मियों को स्वीकार नहीं किया। आर्यसमाजियों ने अपने देश में सब धर्मों का कचड़ा इकट्ठा कर लिया। एक धर्म ऐसा है 'नास्तिक वाद' जो माला में नम्बर ही नहीं पाता। ईश्वर की जो श्रेष्ठ आत्माओं वाली 108 की माला बनती है उसमें उनका नम्बर नहीं लगता। वो ये है 'नास्तिक'; रशियन्सद्ध। वो न स्वर्ग मानते हैं,न नर्क मानते हैं, न आत्मा मानते हैं, न परमात्मा मानते हैं, वो कुछ नहीं मानते। वो अपने नशे में आकर एटमिक एनर्जी तैयार करते हैं कि हम ही सब कुछ हैं। हम चाहेंगे तो दुनियॉ को नचायेंगे नहीं तो नष्ट कर देंगे; लेकिन वो अपने जाल में खुद ही फंस जाते हैं। आज तो रूस बिखर गया और उससे ज्यादा शक्ति अपने एटमिक एनर्जी से अमेरिका ने धारण कर ली है। तो इस तरीके से नं. वार आस्तिक दुनियॉ के मुख्य 9 धर्म हैं। ये 9 धर्मों की मुख्य–मुख्य चुनी हुई बारह–बारह आत्माएं परमात्मा इकट्ठी करता है। सारी सृष्टि से चुनकर बारह नेमा 108 मणके तैयार होते हैं। आज से 60–65 साल पहले भारत वर्ष में इतने भगवान नहीं थे। आचार्य रजनीश भी भगवान, जय गुरूदेव भी भगवान, साईं बाब भगवान, सतपालजी महाराज भगवान,चंद्रा स्वामीजी भगवान, ये ढेर के ढेर भगवान 65 साल पहले थे ही नहीं। 60–65 साल के अंदर ही ये ढेर के ढेर भगवान पैदा हो गये। अब भगवान एक होगा या ढेर के ढेर होंगे ? भगवान तो जरूर एक होगा ;लेकिन हिसाब क्या है ?जब इस सृष्टि पर परमधाम छोड़कर सच्चा हीरा आता है तो उसकी भेंट में ढेर सारे नकली हीरे दुनियॉ के बाजार में तैयार हो जाते हैं। वो नकली हीरे चारों तरफ अपना पाम्प एण्ड शो, शोर–शराबा फैला देते हैं। अभी जबलपुर में महेशयोगी की बिल्डिंग बनी है।सैकड़ों करोड़ रूपयों की वो बिल्डिंग तैयार हुई है। उसमें होना क्या है ? बस वही स्वाहा। उससे कुछ होता तो है नहीं। 2500वर्ष से ये स्वाहा–स्वाहा होता चला आया। इससे कोई दुनियॉ का परिवर्तन होना है क्या? परिवर्तन कुछ भी नहीं होना है। वो एक बात बना दी कि वातावरण शुद्ध होता है। बजाय वातावरण शुद्ध होने के दुनियॉ और ज्यादा बिगड़ रही है। एक भाई ने कहा – अमेरिका से वो गोल्ड का स्मगलिंग करते हैं। चलो वो कुछ भी हो हमने एक बात बताई कि भगवान ढेर के ढेर हैं;

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

लेकिन नकली हीरे हैं और उनमें पता नहीं चल रहा है कि असली कौन है? जरूर असली भी है; लेकिन पता नही चल रहा है और उसका प्रूफ ये है कि भगवान जब आयेगा तो नई सृष्टि की स्थापना के साथ–साथ पुरानी सृष्टि का विनाश का कार्य भी करेगा और करायेगा। सत्धर्म की स्थापना के साथ–साथ जो ढेर के ढेर दुष्ट धर्म फैले हुए हैं। उनका भी विनाश का कार्य करता कराता है। 'विनाशाय च दुष्कृताम्' – गीता का ये पहला श्लोक ही बताता है। तो परमात्मा जब इस सृष्टि आता है तो ये तैयारी पहले कराता है, साथ ही साथ स्थापना गुप्त करता है और विनाश का कार्य प्रत्यक्ष कराता है।

रूस और अमेरिका जिनको अपनी भारतीय परम्परा में महाभारत में यादव कहा गया है, बड़े–बड़े धनाढ्य होते थे और बहुत शराब पीते थे, ऊँची– ऊँची बिल्डिंगें होती थीं और ऐसे जो यादव ग्रुप हैं उन यादव ग्रुप ने क्या किया? थे तो भगवान कृष्ण के कन्ट्रोल में, उनकी राजाई तो उनके ऊपर थी; लेकिन उन्होंने क्या किया कि उनके बुद्धि रूपी पेट से जो मिसाइल्स निकले,उन मूसलों से आपस में मिलकर लड़कर उन्होंने अपने सारे कुल का संहार कर दिया और सारी सृष्टि का विनाश कर दिया। लोगों ने स्थूल मूसल समझ लिये। अब ये तो समझने–समझने की विडम्बना है। वास्तव में है मिसाइल्स की बात। ये जो पेट है इसमें भी कोई बात पचाई जाती है। रखी जाती है। ऐसे ही ये बुद्धि रूपी पेट भी है। कहते हैं ना तुम्हारे पेट में बात नहीं पचती। तो क्या ये; स्थूल पेटद्ध पेट है ? या ये; बुद्धि रूपी द्ध पेट है? तो इस बुद्धि रूपी पेट में से वो मिसाइल्स निकले। उन मूसलों से ये सारी दुनियॉ नष्ट होती है। 60–65 साल के अंदर ही ये एनर्जी भी तैयार हो गई। 60 साल के अन्दर परमात्मा का भी इस सृष्टि पर अवतरण हुआ और 60 साल के अंदर भारतवर्ष में सबसे ज्यादा आवाज जो लगाई थी उस समय महात्मा गांधी के टाइम पर 'हे पतित पावन आओ' की आवाज भी इस भारत में लग रही थी। 40 करोड़ जनता गांधीजी के तत्वावधान में आवाज लगा रही थी,सारे भारत की 40 करोड़ जनता 'रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम' की आवाज़ लगा रही थी; लेकिन आवाज़ लगाने वालों को ये पता नहीं चला कि परमात्मा इस सृष्टि पर उस समय से ही आ चुका है। तो कहने का मतलब ये है, परमात्मा जब आता है तो एक तरफ विनाश की बाजी भी तैयार कर देता है और दूसरी तरफ स्थापना कार्य भी गुप्त में चलाता है। तो उस समय ये दोनों कार्य सम्पन्न हुए, स्थापना का कार्य भी पूरा होता है और एटमिक एनर्जी की भी चर्म सीमा पैदा हो जाती है तब जाकर के इस सृष्टि का एक तरफ विनाश होता है और दूसरी तरफ वो माला तैयार हो जाती है जो सारी सृष्टि धर्मसत्ता और राज्य सत्ता की कन्ट्रोलिंग धीरे–धीरे अपने हाथ में ले लेती है। आपने ज्योतिषियों की कुछ वाणियॉ सुनी होंगी। अक्सर निकलती रहती हैं। पुराने–पुराने 400 साल–500 साल पहले के जो ज्योतिषी हुए हैं किरो, कीट और नेस्तरडाम आदि इनकी भविष्य वाणियॉ निकली हुई हैं। सभी ने 2000 को मुद्दा बनाया है; लेकिन 2000 के आस–पास का जो भी मुद्दा है वो सारी सृष्टि के विनाश का मुद्दा नहीं है। वो वास्तव में सिर्फ ब्रह्माकुमारी आश्रम के अन्दर बीजरूप आत्माओं की दुनियॉ के विनाश का मुद्दा है ये कोई नहीं जानता। ये दुनियॉ एकदम ऐसे खत्म हो जायेगी तो परमात्मा को कौन पहचानेगा? परमात्मा को पहचानने के लिए टाइम तो चाहिए। वास्तव में ये जो 2000 साल के बाद का पीरियड है ये ब्रह्माकुमारी आश्रम में आमूल–चूल परिवर्तन ला देगा। बाहर की दुनियॉ में भी थोड़ा–थोड़ा होगा; लेकिन इतना नहीं होगा कि सारी दुनियॉ खत्म हो जाए। एटमिक एनर्जी का भी थोड़ा–थोड़ा विस्फोट होगा; लेकिन इतना नहीं होगा कि सारी सृष्टि खत्म हो जाए।अभी सिर्फ ब्राह्मणों की पुरानी दुनियॉ का विनाश होता है। नई दुनियॉ की स्थापना होती है और सब आत्माएं पहले बुद्धियोग से वापस परमधाम में जाती हैं। माने ब्राह्मणों की दुनियॉ के अन्दर जो विशेष आत्माएं हैं वो इस बात को समझ लेती हैं कि परमात्मा का साकार रूप और कार्य काल क्या है? और ये कार्य कैसे चल रहा है? यहां दिखाया गया है कि जैसे हम आत्माएं ज्योतिर्बिन्दु हैं वो

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

परमात्मा भी ज्योतिर्बिन्दु है। ज्योतिर्बिन्दु का ही बड़ा आकार शिवलिंग बनाया जाता है, जिसे अपनी भारतीय परम्परा में 12 ज्योतिर्लिंगम् के नाम से प्रसिद्ध किया गया है। उज्जैन, काशी, रामेश्वरम्, केदारनाथ, बद्रीनाथ – ये 12 ज्योतिर्लिंगम बने हैं। 12 ही क्यों? 13 क्यों नहीं? 11 या 10 क्यों नहीं? 9 धर्मों से चुनी हुई आत्माओं के 12 – 12 के 9 ग्रुप्स होते हैं। हर धर्म में श्रेष्ठ आत्माएं तो होती हैं ना? परमात्मा भी जब आता है तो सर्वप्रथम हर धर्म से श्रेष्ठ आत्माओं को चुनता है और चुनकर उनको पक्का सूर्यवंशी ब्राह्मण बनाता है।

आज की दुनियॉ में वास्तव में कोई ब्राह्मण नहीं रहे। ये क्या कहते हैं आप? आप तो ब्राह्मणों की अवहेलना करते हैं द्ध नहीं। तुलसीदास ने ये बात रामायण में लिखकर के छोड़ी है – आज से 400–500 वर्ष पहले 'भये वर्ण संकर सबै' – सारे ही वर्ण संकर हो गये। कोई ब्राह्मण और कोई शूद्र नहीं रहा। उन्होंने 400 साल पहले लिखा था, अब तो हालत बहुत खराब हो गई। अब तो बहुत ज्यादा व्यभिचार फैल गया। घर–घर में भी व्यभिचार फैला हुआ है। तो इस समय परमात्मा आकर असली ब्राह्मण कुल की स्थापना कर रहा है। आपने सुना होगा, उन ब्राह्मणों की 9 कुरियॉ गाई जाती हैं – शांडिल्य गोत्र, भारद्वाज गोत्र, कश्यप गोत्र आदि। नौ ऋषियों के आधार पर नौ गोत्र गाये जाते हैं। वो नौ ऋषि कोई दूसरे नहीं हैं। 9 धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाली नौ श्रेष्ठ आत्माएं हैं जो परमात्मा इस सृष्टि से असली ब्राह्मण धर्म में चुनता है। जो 9 आत्माएं हैं उनमें से एक सबसे श्रेष्ठ होगा ना? जो सबसे श्रेष्ठ हुआ उसके जो 12 के ग्रुप हैं वो परमात्मा शिव से इतना तादात्म्य स्थापित करते हैं कि उनकी,परमात्मा शिव जैसी ही स्टेज बन जाती है। इसलिए तो 12 ज्योतिर्लिंगम आज भी भारतवर्ष में भगवान के रूप में पूजे जाते हैं। तो कहने का मतलब ये हुआ कि परमात्मा शिव भी ज्योतिर्बिंदु है। ऋषियों–महर्षियों ने उसकी पूजा के लिए बड़ा आकार बना दिया है। वो निराकार का प्रतीक है। निराकार का मतलब ये है कि उस स्टेज में जो 12 हैं उनमें से एक शंकर का रूप जिसे रूद्र अवतार कहा जाता है। वो ऐसी स्टेज में रहता है कि जैसे कि हमारे शरीर रूपी वस्त्र है ही नहीं । नं.वार इस स्टेज में रहना,अपने को सदैव आत्मिक स्टेज में समझना,दूसरों को आत्मा के रूप में देखना ऐसी प्रैक्टिस पक्की हो जाये उसको कहेंगे – निराकारी स्टेज। इंद्रियॉ जैसे होते हुए भी नहीं हैं। जैसे कहते हैं देखते हुए भी नही देखना,सुनते हुए नहीं सुनना। जैसे दुनियॉ में कितनी भी ग्लानी उड़ रही है,उनके ऊपर कोई असर नहीं पड़ रहा है तो सुनते हुये न सुनना।

त्रिमूर्ति शिव

वो तो गाडॅफादर है, जिसके नाम–रूप अलग–अलग दे दिये हैं; लेकिन अलग–अलग नाम–रूप देते हुए भी एक रूप ऐसा है जो हर धर्म में मान्यता प्राप्त करता है। कैसे ? अपने भारतवर्ष में ज्योर्तिलिंगम् माने जाते हैं,रामेश्वरम् वगैरह। कहते हैं राम ने भी किसकी उपासना की? राम को भगवान मानते हैं; लेकिन उपासना किसकी की? शिव की उपासना की ।तो राम भगवान हुआ या शिव भगवान हुआ? शिव ही हुआ। ऐसे ही गोपेश्वरम् मंदिर भी बना हुआ है। गोप 'कृष्ण' को कहा जाता है। तो उससे साबित हो गया कि कृष्ण भगवान नहीं थे। वास्तव में उनका भी कोई ईश्वर है, जिनको राम–कृष्ण जैसा उसने बनाया। ऐसे ही केदारनाथ है, बद्रिनाथ है, काशीविश्वनाथ है और ये सोमनाथ है। ये सभी मंदिरों में इस बात की यादगार है कि भारतवर्ष में वो निराकार ज्योति को ज्योतिर्लिंगम् के रूप में माना जाता है।नेपाल में पशुपतिनाथ का मंदिर है। कलियुग के अंत में सारे मनुष्यमात्र पशुओं जैसे आचरण करने वाले हो जाते हैं। उन पशुओं को भी पशु से, जानवर से, बंदर से मंदिर लायक बनाने वाला वो ही निराकार शिवज्योति है।वो एक शिवलिंग नेपाल में भी स्थापित है। अच्छा,हिन्दुओं की बात छोड़ दीजिए। मुसलमान लोग मक्का में हज़; तीर्थ यात्रा करने जाते हैं।

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

वहॉ भी मुहम्मद ने दिवाल में लाकर एक पत्थर रखा था। उसका उन्होंने 'संग–ए–असवद्' नाम दिया। अभी भी मुसलमान जब तक वो पत्थर चुम्बन नहीं कर लेते सिजदा नहीं माना जाता, उनकी हज़ की यात्रा पूरी नहीं होती। इसका मतलब वो भी आज तक उस निराकार को मानते हैं,हालांकि वो पत्थर को नहीं मानते। मुसलमान लोग पत्थर को, शिवलिंग को तोड़ने वा वाले रहे हैं। उन्होंने यहॉ भारत में आकर शिवलिंग को तोड़ा है; लेकिन वहॉ मानते हैं। बौद्धी लोग आज भी चीन,जापान में देखे जाते हैं कि वो गोल स्टूल के ऊपर पत्थर की बटिया रखते हैं और उसके ऊपर दृष्टि एकाग्र करेंगे। इससे साबित है वो भी उस निराकार को मानते हैं। गुरूनानक ने तो कई जगह कहा है 'एक ओंकार निरंकार'। 'सदगुरू अकाल मूर्त'। वो तो निराकार को मानते ही हैं। क्राइस्ट की बाईबल में तो कई जगह लिखा हुआ है 'गॉड इज लाइट'। परमात्मा ज्योति है। माना उस निराकार ज्योति को हर धर्म में मान्यता है। तो सवाल ये पैदा होता है कि जब सब धर्मो में उस एक ही रूप की मान्यता है, तो सब धर्मवाले एक ही को परमात्मा का रूप क्यों नहीं मानते हैं? ये अलग–अलग रूप क्यों माने हुए हैं? तो ये वास्तविकता किसी की बुद्धि में नहीं आ रही है।

वो निराकार ज्योति जब इस सृष्टि पर आती है तो जो विशेष आत्माएं राम और कृष्ण हैं इन दो को चुनकर सृष्टि की स्थापना और विनाश के कार्य में मुखिया बनाती है। कृष्ण की सोल आखरी जन्म में आकर दादा लेखराज ब्रह्मा के रूप में सिन्ध–हैद्राबाद में जन्म लेती है और उसमें प्रवेश करके परमात्मा शिव ब्रह्मा के रूप में कार्य करते हैं। प्यार का पार्ट बजाते हैं। आप कहीं भी, किसी भी ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाएं तो आप कोई भी ब्रह्माकुमार–कुमारी से पूछना कि बाबा ने कभी किसी को टेढ़ी ऑख से देखा या गलत कुवचन कहा या कभी कोई ऐसा है जिसने बाबा के सम्पर्क में पहुॅचने के बाद ये अनुभव किया हो कि ब्रह्मा बाबा ने हमको दुःख दिया? एक–एक ब्रह्माकुमार–कुमारी यही कहेगा कि बाबा भले 10मिनट के लिए मिले हों, बाबा ने हमको जितना प्यार दिया उतना दुनियॉ में हमको किसी से अनुभूति नहीं हुई। वो थे प्यार की प्रतिमूर्ति ब्रह्मा बाबा। जैसे अभी भी टी.वी में सीरियल आते हैं,तो आप देखते है कि असुरों ने वरदान ले लिये।हैं असुर; लेकिन वरदान फिर भी मॉ से ले लेते हैं।तो वास्तव में वो रूप दिखाया गया है और इनके जस्ट अपोजिट एक दूसरा रूप है रामवाली आत्मा। जो त्रेता में 'कल्प कल्प लगि प्रभु अवतारा' – ऐसे जो कहा गया है ना। तो वो रामवाली आत्मा हर कलियुग के अन्त में आती है तो परमात्मा उसमें प्रवेश करके शंकर के नाम–रूप से प्रख्यात होते हैं। देखो, जैसे इन कृष्ण का नाम–रूप प्रख्यात हुआ है 'ब्रह्मा'।वैसे उन राम का नाम–रूप प्रख्यात होता है 'शंकर'। ये दोनों ही शक्तियों की सहयोगी दो आत्माएं शक्तियॉ भी हैं। कृष्ण की सहयोगी शक्ति 'राधा' और राम की सहयोगी शक्ति सीता'। इनके वर्तमान रूप– नाम पड़ते हैं – 'ब्रह्मा' की सहयोगी शक्ति 'सरस्वती' और शंकर की सहयोगी शक्ति 'पार्वती'। ये वर्तमान स्वरूप के नाम हैं। जबकि कलियुगी दुनियॉ समाप्त होती है, नई सतयुगी सृष्टि रची जाती है, तो चारों आत्माओं के स्वभाव–संस्कार का कॉम्बिनेशन होता है।अभी तो हर घर में स्त्री–पुरूष के संस्कार आपस में टकराते हैं। कोई घर ऐसा नहीं होगा जिसमें संस्कार टकराये नहीं; लेकिन सबसे पहले एक ऐसी भी दुनियॉ परमात्मा ने बनाई थी कि चार आत्माओं के सारे संस्कार मिलकर एक हो गये थे। वो ये आत्माएं है जो सृष्टि के हीरो–हीरोईन हैं और ये आत्माओं का कॉम्बिनेशन विष्णु की भुजाओं के रूप में दिखाया गया है। भुजाएं कहते हैं ना। मेरे भैया ने शरीर छोड़ दिया।मेरी दाहिनी भुजा टूट गई। तो दाहिनी भुजा थोड़े ही टूट गई। माना सहयोगी शक्ति जो है वो चली गई। तो इसी तरह परमात्मा के कार्य में दो दाहिनी भुजा केण रूप में सहयोगी बनते हैं, ब्रह्मा–सरस्वती माना कृष्ण–राधा। ये कड़ा, कठोर रूप कभी नहीं अपनाते। परिवर्तन के लिए इन्होंने हमेशा प्यार का काम किया। ।इसलिये इनको परमात्मा ने राइट हैण्ड स्वीकार किया; लेकिन जब राइट हैण्ड से काम नहीं निकलता तो फिर टेढ़ी उंगली भी की जाती है। वो दो रूप हैं–शंकर और पार्वती। आदि शक्ति चामुंडा का रूप धारण

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

करती है और शंकर प्रलयंकर रूप धारण करता है। वो राम/ शंकर वाली आत्मा प्रलय मचाती है।शक्ति का रूप धारण किए बगैर रावण,कुम्भकरण,मेघनाद जैसे असुर परिवर्तन नहीं हो सकते हैं। इन ब्राह्मणों के अन्दर जो ज्यादा से ज्यादा तादाद में ऐसे आसुरी तत्व घुस गये, जो रावण,कुम्भकरण,मेघनाद का पार्ट बजाते हैं उनको सुधारने के कार्य के लिये ये ज्ञान बाण मारने वाली वो राम की आत्मा तैयार होती है। बाण कोई दूसरे नहीं है। परमात्मा ने आकर मुख के द्वारा जो उनके लिए तीखी बातें बोली हैं वो बातों का अर्थ ही ज्ञान बाणों का काम करती हैं। हमको तो वो महावाक्य प्यारे लगते हैं ;लेकिन उस तरह की जो आसुरी ब्राह्मण आत्माएं परिवार में घुसी हुई हैं उनको वो बाण लगते हैं। उनको घाव पैदा कर देते हैं। तो इस तरीके से ये जो दो रूप है उनमें ये तीसरा रूप समाया हुआ है, ब्रह्मा–सरस्वती, शंकर और पार्वती रूपी चार आत्माओं का कम्बिनेशन ही विष्णु कहा जाता है। बाकी ऐसा कोई व्यक्ति संसार में कभी हुआ नहीं है जो चार भुजाओं का रहा हो या दस सिर का रावण रहा हो। 10 सिर का रावण का मतलब ये है कि दसों धर्म दुनियॉ में मिलकर के संसार में प्रजातंत्र राज्य का ऐसा संगठन बनाते हैं जिससे सारी दुनियॉ में तबाही पैदा हो जाती है। बाकी परमात्मा ने तो आकर राजयोग सिखाकर दैवी राजाओं का राज्य स्थापन किया था।

परमात्मा जो स्कूल खोलता है, सदगुरू कहा जाता है तो जरूर वो ऐसी ईश्वरीय यूनिवर्सिटी का वाइस चान्सलर बनता होगा,जहॉ वो कोई बड़ी–बड़ी पदवियॉ देकर जाता हो। परमात्मा वो बड़ा पद देता है। देश में और विदेश में जन्म जन्मान्तर के जो राजायें बने हैं उन राजाओं को राजाई करने की हिकमत उसने सिखाई थी। उसको राजयोग कहा जाता है। वो राजयोग गीता ज्ञान के द्वारा परमात्मा अभी सिखा रहा है। जन्मजन्मांतर का राजा बना रहा हैं। जो लौकिक बाप होते हैं वो तो एक जन्म की प्राप्ति कराते हैं, वर्सा देते हैं; लेकिन ये पारलौकिक बाप जब आता है तो सृष्टि पर अपने आत्मा रूपी बच्चों को अनेक जन्मों की राजाई दे कर जाता है। वो अनेक जन्मों की राजाई अभी दी जा रही है।108 श्रेष्ठ आत्माएं अभी कुछ ही वर्षों में संसार में जल्दी ही ऐसी प्रत्यक्ष होने वाली हैं, जो सारे संसार में तहलका मचायेंगी और सारे संसार की धर्म और राज्य सत्ता दोनों की बागडोर अपने हाथ में ले लेंगी। यही 108 श्रेष्ठ आत्माएं आज भी सभी धर्मों में माला के रूप में सिमरण की जाती हैं।

सारी दुनियॉ माया के पंजे में फॅस जाती है तब वो ज्ञानसूर्य परमात्मा इस सृष्टि पर आता है। माया का पंजा और कोई स्त्री नहीं है। ये काम, क्रोध,लोभ मोह,अंहकार ये पॉच विकार मनुष्य के अन्दर भरे हुए हैं,उन पॉच विकारों में सारी दुनिया जकड़ गई है। आज एक भी मनुष्य ऐसा नहीं है जो इन पॉच विकारों की जकड़ से बाहर हो। जब सृष्टि की ऐसी हालत हो जाती है तब परमात्मा शिव आते हैं जिसकी यादगार ये महाशिवरात्रि मनाई जाती है। इस महाशिवरात्रि में परमात्मा शिव जब आते हैं तो चारों तरफ दुनियॉ में अनेक धर्म फैले हुए होते हैं। उन धर्मों में धर्म के नाम पर वितंडावाद ज्यादा है,ज्ञान कुछ भी नहीं है। ज्ञान के नाम पर अज्ञान ही अज्ञान सुनाया जाता है और पैसे को ज्यादा महत्व दिया जाता है,दिखावे को ज्यादा महत्व दिया जाता है और जो धर्म की स्थापना का कार्य है, धारणा की बातें हैं वो ना के बराबर होती हैं। तब परमात्मा ज्ञान सूर्य इस सृष्टि पर आकर उस अज्ञान अंधकार का विच्छेदन करता है। इसीलिए उसकी यादगार में भारतवर्ष में अर्धरात्रि को माघ मास में महाशिवरात्रि मनाई जाती है। माना जब आखिरी मास होता है माना सृष्टि का आखिरी टाइम होता है, कलियुग का अन्त होना होता है तब दुनियॉ में अज्ञान अंधकार चारों तरफ फैला रहता है। जैसे शक्तिमान सीरियल में आता है 'अंधेरा कायम रहेगा' – तो असुर तो यही चिल्लाते हैं कि अंधेरा कायम रहे,दुनियॉ अज्ञान में रहे और हम अपना काम बनायें। तो ये हैं असुर–काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। जिनका मुखिया है काम विकार। वो काम विकार को

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

परमात्मा आकर सबसे पहले इस शंकर के चोले के द्वारा भस्म कराते हैं। हमने समझ लिया वो काम विकार कोई देवता का रूप होगा। उसको कामदेव नाम दे दिया; लेकिन वास्तव में वो कोई अलग से देवता नहीं होता। ये हमारे अन्दर की ही कुप्रवृति है, हमारे अन्दर की कमजोरी है, हमारे अन्दर की वो विकृति है जो उस शंकर देव ने पहले भस्म कर दी; लेकिन उन भस्म करने वालों में नम्बरवार होते हैं। जो सबसे पहले उसको भस्म कर लेता है, वह बात शंकर के लिये दिखाते हैं। उनका ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला और काम विकार भस्म हो गया।
वो कोई बाहर का काम विकार थोड़े ही था। ये तो अंदर की चीज थी जो उसने भस्म कर दी, नष्ट कर दी। तो जब मुखिया भस्म होगा तो बाकी ये जो चार चोर ,डकैत हैं वो तो अपने आप भाग जाएंगे।

शिव और शंकर

यहां दिखाया गया है कि वास्तव में शिव अलग से परमात्मा है और शंकर अलग आत्मा है। गल्ती के कारण हमने दोनों को एक कर दिया; लेकिन गल्ती नहीं है। वास्तव में वो हमारी बेसमझी की बात हो गई। ये बेसमझी होने के कारण ही ब्रहमाकुमार कुमारियॉ भी उस बेसमझी में फॅसे हुए हैं। क्या बेसमझी हो गयी? कि वो सुप्रिम सोल निराकार ज्योर्तिबिंदु जब इस सृष्टि पर आता है तो इस सृष्टि पर आकर किसी जनसाधारण को जरूर आप समान बनायेगा। पढ़ाई पढ़ायेगा। तो टीचर का कोई तो स्टुडेन्ट ऐसा निकलेगा जो उसकी पूरी सौ परसेंट पढ़ाई को धारण कर ले तो वो निराकार ज्योति शिव आकर इस शंकर स्वरूप के द्वारा संसार में प्रत्यक्ष होता है और इस तरह दोनों का तादात्म्य हो जाता है। आप देखेंगे कोई ये नहीं कहता है कि शिव ब्रहमा एक है, शिव के साथ ब्रहमा का नाम क्यों नहीं जुड़ा ? शिव के साथ विष्णु का नाम क्यों नहीं जुड़ा? शव के साथ शंकर का ही नाम क्यों जुड़ता है? इसलिए जुड़ता है कि शंकर शिव की याद में इतना तल्लीन हो जाता है कि उसको अपने में समा लेता है। तो वो समाने की स्थिति जो है वो 'शिव शंकर एक है'। – ये स्थिति संसार में प्रसिद्ध होती है । वास्तव में दोनों आत्मायें अलग–अलग हैं। ये सुप्रिम सोल जन्म–मरण के चक्र में कभी आता ही नहीं। इसलिए शिवलिंग कहा जाता है। शंकर लिंग नहीं कहा जाता है। शिवरात्रि कही जाती है। शंकर रात्रि नहीं कही जाती। शिव ऐसी चीज है जो कि पाप और पुण्य से हमेशा परे है और जो देहधारी हैं वो पाप–पुण्य के अंदर फॅसते हैं।अब आप देखिये शंकर ध्यान में बैठे हैं। अगर ये खुद ही परमात्मा का रूप होते, सुप्रिम सोल होते तो ये किसका ध्यान कर रहे हैं? आप पुराने–पुराने मंदिर में जाइये, आप देखेंगे बीच में मुख्य स्थान पर शिवलिंग है और आस–पास सभी देवताओं के साथ शंकर की भी मूर्ति रखी हुई होती है। इससे क्या साबित हुआ? कि और जितने देवतायें है उन 33 करोड़ देवताओं के बीच में देव देव महादेव तो वो जरूर है; लेकिन वो परमात्मा नहीं है। वो भी उसकी उपासना में सामने बैठा हुआ है। किसके सामने? शिवलिंग के सामने।तो निराकार की यादगार लिंग रूप शिवज्योर्तिबिंदु सुप्रिम सोल है और ये शंकर हीरोपार्टधारी इस सृष्टि रूपी रंगमंच का नायक है।

परमात्मा सर्वव्यापी नहीं

यहां ये बताया गया है ईश्वर जब सृष्टि पर आयेगा तो जरूर कोई न कोई ऐसा ज्ञान का नया प्वाइन्ट तो जरूर बतायेगा जिसमें सारी दुनियॉ भ्रमित हुई पड़ी हो। ऐसी नई बात जरूर सुनायेगा जो सारी दुनियॉ उस बात को न जानती हो। विपरीत बातें ही जानती हो। तो वो बात है जब दुनियॉ में चारों तरफ भगवान को ढूॅढा और कहीं नहीं मिला तो लोगों ने उसको कहना शुरू कर दिया वो तो सर्वव्यापी है। जर्रे–जर्रे में भगवान है। कण–कण में भगवान है। जहॉ देखो वहॉ

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

भगवान है; लेकिन वास्तव में गीता में एक पूरा श्लोक ही इस बात के लिए आ गया है कि 'तद् धामो परम् मम्' – मैं वहॉ परमधाम का रहने वाला हूँ। तो जब दुनियॉ का सबसे श्रेष्ठ ग्रन्थ गीता है जिसकी सबसे ज्यादा टीकायें हुई हैं। उसमें पूरे श्लोक में ये बात साबित हो गई है । तो एक शब्द आया है 'विभु'। उस शब्द का उन्होंने इतना बड़ा अर्थ कर दिया कि चारों तरफ संसार में यही बात फैली हुई है कि वो सर्वव्यापक है वास्तव में विभु का अर्थ ये है कि वो विशेष रूप से हर मनुष्य आत्मा के बुद्धि में 'भू' माना याद के रूप में अपना स्थान बना लेता है। उसका उल्टा अर्थ लगाकर उन्होंने परमात्मा को सर्वव्यापी कह दिया। यहॉ बात समझाई गई है कि परमात्मा वास्तव में सृष्टि पर सर्वव्यापी नहीं है। गीता और रामायण भी इस बात के प्रमाण हैं। गीता में, रामायण में लिखा है कि जब–जब इस सृष्टि पर अधर्म का बोलबाला होता है तब–तब मैं आता हूँ।'आता हूँ' से साबित ही हो गया कि वो नही था, तब तो आया। नहीं तो उसको आने की क्या दरकार थी ? दूसरी बात, गीता का श्लोक जो अभी–अभी आपको बताया,वो तो पक्का–पक्का साबित कर रहा है कि परमात्मा 'ऊँचा तेरा धाम, ऊँचा तेरा नाम, ऊँचा तेरा काम ऊ'। धाम, काम, नाम तीनों ही जब ऊँचा है तो वो ऊँचा ही बैठेगा या नीचे बैठेगा? इस दुनियॉ का राजा भी होता है तो वो भी ऊँची गद्दी पर बैठता है। तो हमने परमात्मा को कण–कण में क्यों मिला दिया? यहां दिखाया गया है ये ऋषि ,मुनि ,सन्यासी भाव विभोर होते हैं तो खड़ताले बजाकर कहते हैं, 'हे प्रभु हमें दर्शन दो' परंतु जब प्रवचन करते हैं तो कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। आत्मा सो परमात्मा,शिवोऽहम। हम परमात्मा के रूप हैं। हम ही भगवान हैं। तो ये बात तर्कसंगत साबित नहीं होती । एक बात पर पक्का रहना चाहिए। ये क्या बात हुई? कीर्तन करने लगे तो प्रभुजी हमें दर्शन दो। अब दर्शन कहां से दें? तुम्हारे अंदर खुद ही भगवान बैठा हुआ है। तुम खुद ही भगवान के रूप हो। यहां ये दिखाया गया है कि जो प्रवचन सुनने वाले हैं वो जिस समय गुरूजी महाराज का प्रवचन सुनते हैं तब तो भाव विभोर होकर कहते हैं हॉ, परमात्मा सर्वव्यापी है। बहुत अच्छा ज्ञान सुनाया। घर में पहुँचते ही भाई–भाई की हत्या करने लगे। अब उन्हें भाई–भाई के अंदर भगवान नहीं दिखाई दिया। ये विरोधाभास एकदम इतना कैसे पैदा हो गया?

वास्तव में सबके अंदर अपनी–अपनी आत्मा होती है।परमात्मा उनसे अलग है। अपनी भारतीय परम्परा में जो मैथोलोजी चली है वो शंकराचार्य की मैथोलोजी अलग है और माधवाचार्य की मैथोलोजी अलग है। माधवाचार्य की गीता में बताया गया है कि आत्मा सब अलग–अलग हैं और परमात्मा उनसे अलग। शंकराचार्य की गीता में बताया गया है 'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' – इस दुनियॉ में जो कुछ भी देखने में आ रहा है वो सब परमात्मा का रूप है। माधवाचार्य ने बताया की हर आत्मा में अलग–अलग संस्कार हैं। ये आत्मायें जब गर्भ में शरीर धारण करेंगी तो ये अपना ही पार्ट बजायेंगी। इसका पार्ट दूसरी आत्मा से मिल नहीं सकता। हम हमेशा शास्त्रों में मिसाल ये देते आये हैं कि हम सब आत्मायें सागर में बुदबुदा हैं। बुदबुदे सब सागर में समा जाते हैं। माने हम उस सागर का अंश हैं। यही कहा ना? लेकिन हम एक बात भूल गये अगर हम बुदबुदे हैं ,हम सागर का अंश हैं तो सागर में से जो चूल्लू भर पानी हमने ले लिया, उसमें जो खारीपने का गुण होगा वही सागर के पानी में भी होना चाहिए ना? ये पानी हमने उसमें मिला दिया। दोंनों का गुण अभी भी एक ही है; लेकिन हमारे सबके अंदर ये संस्कार अलग–अलग कैसे हैं? ये अलगाव कहां से आ गया? और जन्म जन्मातंर ये अलगाव चलता चला जा रहा है। दूसरी बात, इसका एक और परिहार है। कभी आपने ये चाहा है कि हमारी आत्मा का जो अस्तित्व है वो हमेशा के लिए खत्म हो जाए? कोई चाहता है? अगर हमारी आत्मा उस सुप्रिम सोल में जाकर लीन हो जाए, सागर में चूल्लू भर पानी मिला दिया गया तो उसका अस्तित्व हमेशा के लिए खत्म हो गया। फिर शास्त्र में ये बात कहां से आती है – 'कल्प कल्प लगि प्रभु अवतारा'। जब–जब त्रेतायुग होता है तब–तब राम का अवतार होता है। अजर–अमर तो सभी आत्मायें हैं, वो तो बात ठीक है। वो एक अलग बात। सभी

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

आत्मायें अजर–अमर हैं। उनका अस्तित्व, उनका संस्कार सबका अलग–अलग है; लेकिन हर आत्मा का अनेक जन्मों का जो पार्ट है जो उस ज्योतिर्बिन्दु रूपी टेप रिकार्डर में भरा हुआ है, जब इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कोई भी आत्मा उतरेगी तो सतयुग के आदि से लेकर कलियुग के अंत तक वो उतने ही जन्म लेगी जितना पहले चतुर्युगी में जन्म लिया था। अगर राम की आत्मा होगी तो त्रेतायुग से राम के रूप में जन्म लेगी। 'हे कृष्ण नारायण' की आत्मा होगी तो वो सतयुग के आदि में फिर नारायण के रूप से राज्य करेगी। इस तरह हर आत्मा का पार्ट शरीर रूपी चोला बदलने का निश्चित है। हर 5000 वर्ष के बाद वो ज्यों का त्यों पुनरावर्तन होता है। तो आत्मा सो परमात्मा नहीं है। सुप्रिम सोल हमेशा अलग है। वो जन्म–मरण के चक्र में आने लगेगा तो हमको छुड़ाने वाला कोई भी नहीं है। वो सुप्रिम सोल की तुलना हम आत्माओं से नहीं की जा सकती है। हम आत्मायें हीरोपार्टधारी बन सकते हैं, हीरोईन पार्टधारी बन सकते हैं, हम विलियन का पार्ट बजा सकते हैं, हम और साधारण आत्माओं का पार्ट बजा सकते हैं; लेकिन सुप्रिम सोल शिव जैसा पार्ट किसी का नहीं। वो तो उसका तुरिया पार्ट है। वो बार–बार इस सृष्टि पर आता भी नहीं। जैसा शास्त्र में लिख दिया है 'सम्भवामि युगे युगे' अर्थात् मैं हर युग में आता हूं। अरे, हर युग में आता है तो द्वापर के अंत में जब महाभारत युद्ध कराया, कृष्ण के रूप में परमात्मा आया तो क्या पापी कलियुग की स्थापना करने के लिए आया था? हर युग में आने की क्या जरूरत है? साधारण बाप होता है वो भी तो बच्चों के लिए मकान तब तैयार करता है जब मकान पुराना हो जाता है। उस पुराने मकान से काम नहीं चलता। जब तक चल सकता है तब तक मरम्मत कराता रहता है। इस सृष्टि रूपी मकान की भी यही हालत है। इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट गुरूनानक ये आकर जगह–जगह मरम्मत करते रहे। किसी ने अरब देश में आकर मरम्मत की, किसी ने युरोपिय देशों में मरम्मत की, किसी ने चीन, जापान में मरम्मत की। नया मकान तो किसी ने नहीं बनाया। नई सृष्टि तो नहीं बनाई। मरम्मत कितने दिन चलेगी? थोड़े टाइम तक वो धर्म का थोड़ा समय प्रभाव रहता है। फिर वो खलास। आखरीन तो फिर भी उसी सुप्रिम सोल बाप शिव जो धर्मपिताओं का बाप है,बापों का भी बाप है उसको इस सृष्टि पर उतरना ही पड़ता है। वो आकर इस सृष्टि का आमूलचूल सारा ही परिवर्तन कर देता है। तो वो सर्वव्यापी नहीं है। वो तो इस सृष्टि पर मुकर्रर रूप से हीरोपार्टधारी में प्रवेश करके पार्ट बजाता है।

आपने जीजस का नाम सुना? क्राइस्ट का नाम सुना ? ये दो नाम क्यों? क्रिश्चियन्स लोग ये मानते हैं कि वो व्यक्ति जो पहले ख्याति प्राप्त नहीं था उसका नाम जीजस था। फिर जब ख्याति प्राप्त हो गया तब उसका नाम क्राइस्ट पड़ गया। इसका रहस्य कोई नहीं जानता । ये परमात्मा शिव आकर बता रहे हैं कि कोई भी नई सोल ऊपर से उतरती है तो जिसमें भी प्रवेश करती है उसका नाम बदल देती है। पहले नरेन्द्र नाम था बाद में विवेकानन्द नाम पड़ गया। आचार्य रजनीश का भी ऐसे ही हुआ है। पहले ये एक साधारण लेक्चरर थे। सोल ने प्रवेश किया, आचार्य रजनीश नाम पड़ गया। तो हर आत्मा जो ऊपर से नीचे उतरती है वो जिसमें प्रवेश करती है उसको कनवर्ट कर देती है। जिसमें प्रवेश करती है वो भारत की ही सनातन धर्म की आत्मा होती है और प्रवेश करके उसको कनवर्ट करके अपने धर्म में खींच ले जाती है। ऐसे2 दूसरे–दूसरे धर्मों में कनवर्शन हुआ। भारतवासियों से ही दूसरे–दूसरे धर्म पनपे हैं और वृद्धि को पाये हैं।

कहने का मतलब ये हुआ कि वो सुप्रिम सोल शिव की तुलना हम आत्माओं से नहीं हो सकती। हम आत्माओं के मुकाबले वो हमेशा तुरीया है। वो तो सुख भी नहीं भोगता है, दुःख भी नहीं भोगता है। वो सुख–दुःख से हमेशा ही परे रहने वाला है। हॉ, ये बात जरूर है जब इस सृष्टि पर आकर राजयोग सिखाता है तो ऐसी पढ़ाई पढ़ाता है कि हम आत्मायें नं वार पुरुषार्थ अनुसार इस स्टेज को प्राप्त करें कि इस सृष्टि पर रहते हुए भी, दुःख–सुख में रहते हुए भी अपनी ऐसी स्टेज बना लें

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

कि दुःख के समय में हम दुःखी न हों और सुख के समय में हम बहुत ज्यादा प्रसन्न न हों। सामान्य स्थिति। 'स्थितप्रज्ञ' जिसका नाम दिया गया; लेकिन वो हमारी अवस्था हमेशा के लिए नहीं रहेगी। उस शिव की हमेशा के लिए रहेगी। वो सुप्रिम सोल है। तो फिर आत्मा परमात्मा एक कहॉ हुए?परमात्मा सर्वव्यापी कहॉ हुआ?सुप्रिम सोल तो हमशा अलग ही हुआ। अच्छा।

'झण्डा ऊंचा रहे हमारा ,विजयी विश्व तिरंगा प्यारा। ''विश्व विजय करके दिखलावे।' – ये बोलते तो हैं; लेकिन ये नहीं जानते हैं कि वो शरीर रूपी तीन वस्त्र कौन से हैं?जिन तीन वस्त्रों ने सारे विश्व में तहलका मचाया था, विश्व में विजय करके दिखलाई थी। वास्तव में वो तीन शरीर रूपी वस्त्र ब्रह्मा, विष्णु, शंकर ये तीन ही हैं। उनके रंग भी वैसे ही दिखाये गये हैं। ऊपर वाला केसरिया रंग है शंकर– क्रांति का सूचक। बीच वाला सफेद वस्त्र सत्वगुणी विष्णु का सूचक है, नीचे वाला हरा ब्रह्मा का वस्त्र है। जैसे गॉधीजी कहते रहे हैं रामराज्य आयेगा, रामराज्य आयेगा। आ गया रावण राज्य। ऐसे ही ब्रह्मा बाबा हमेशा चिल्लाते रहे रामराज्य लायेंगे, स्वर्ग आयेगा, बैकुण्ठ आयेगा और स्वर्ग आने ही वाला है। अब उस स्वर्ग की जगह ब्रह्माकुमारी आश्रमों में नर्क बन गया। (इसीलिए पूजा, मूर्तियॉ और मंदिर ब्रह्मा के नहीं होते; क्योंकि तथाकथित ब्रह्माकुमार–कुमारियों ने ही ब्रह्मा की दाढ़ी की लाज नहीं रखी जबकि शंकर और विष्णु की मूर्तियॉ बनाकर आज सारे भारत में पूजा की जा रही हैं। ओमशांति ओमक्रांति

त्रिमूर्ति

शिव का अर्थ है – ' कल्याणकारी' । परमात्मा का यह नाम इसीलिए है कि सृष्टि चक्र के अंत में जब मनुष्यात्माएं तथा प्रकृति पतित एवं तमोप्रधान बन जाती हैं तो परमधाम निवासी परमपिता शिव मनुष्य शरीर का आधार लेकर मनुष्यात्माओं और प्रकृति दोनों को पावन एवं सतोप्रधान बनाते हैं। उनके इस कर्तव्य के यादगार में ही शिवरात्री अर्थात् परमपिता शिव के शब्दों में शिवजयंती का त्यौहार मनाया जाता है।

परमपिता शिव किसी पुरुष के बीज से या माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते ; क्योंकि वे स्वयं ही सबके मात –पिता हैं, मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष के चैतन्य बीज हैं और जन्म – मरण तथा कर्मबंधन रहित हैं। अतः वे अपना कर्तव्य करने के लिए किसी साधारण वृद्ध मनुष्य के तन में दिव्य प्रवेश करते हैं। इसे ही परमात्मा का दिव्य अवतरण कहा जाता है; क्योंकि उनका अपना शरीर नहीं होता है। उनका दिव्य कर्तव्य तीन चरणों में सम्पन्न होता है –
स्थापना,विनाश, और पालना । इन तीन कर्तव्यों के लिए परमपिता शिव अव्यक्त स्थिति धारण करने वाली तीन साकार देवात्माओं का आधार लेते हैं। वे देवात्माऐं हैं – ब्रह्मा,शंकर तथा विष्णु। मनुष्य सृष्टि रूपी रंगमंच पर उनके दिव्य अवतरण के बाद कौन सी तीन आत्माएं ब्रह्मा,शंकर एवं विष्णु के पात्रों का अभिनय करती हैं, यह जानने के लिए हमें सन 1936– 37 में परमात्मा के अवतरण से लेकर अब तक की घटनाओं को जानना जरूरी है।

सन् 1936 – 37 में तत्कालीन हैदराबाद,सिंध (वर्तमान पाकिस्तान में) के हीरों के विख्यात व्यापारी दादा लेखराज को विष्णु चतुर्भुज ,स्वर्ग आदि के दिव्य साक्षात्कार हुए। उनके द्वारा अन्य लोगों को भी दिव्य साक्षात्कार होने लगे।हालांकि दादा लेखराज के लौकिक में कई गुरू थे फिर भी वे इन साक्षात्कारों का अर्थ नहीं समझ सके। इनका रहस्य जानने के लिए वे हिन्दुओं के धार्मिक केन्द्र वाराणसी गए किंतु वहॉ भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी। अंत में उन्हें अपने वृद्ध व्यावसायिक भागीदार की याद आई जो कलकत्ते में उनकी एक जवाहरातों की दुकान

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

सम्भालते थे। वहॉ जाकर उन्होंने एक माता के समक्ष साक्षात्कारों का वर्णन किया। फिर माता में परमपिता शिव ने प्रवेश कर सेवकराम ; भागीदार द्ध को साक्षात्कारों का जैसा का तैसा वर्णन किया । भागीदार भी एक साधारण मानव थे, किन्तु परमात्मा शिव ने उसी समय उनमें प्रवेश कर दादा लेखराज को हुए साक्षात्कारों का अर्थ गीता माता को समझाना प्रारम्भ किया । उस समय एक और बहन भी वहॉ उपस्थित थी । बाद में परमात्मा ने दादा लेखराज को बताया कि परमात्मा, दादा लेखराज के द्वारा नई दुनियॉ (स्वर्ग) की स्थापना का कार्य आरम्भ कर रहे हैं तथा उस नई दुनियॉ में दादा लेखराज ही श्रीकृष्ण के रूप जन्म लेंगे। इस प्रकार चूंकि परमपिता शिव ने सर्वप्रथम माता एवं भागीदार में प्रवेश कर विश्व परिवर्तन का कार्य आरम्भ किया इसीलिए वे जगदम्बा तथा प्रजापिता ब्रह्मा एवं राधा बच्ची ;उपस्थित बहनद्ध या आदि देवी और आदि देव सिद्ध होते हैं। चूंकि दादा लेखराज और उस बहन ने सर्वप्रथम परमपिता शिव भगवानुवाच को सुना और समझा, इसीलिए वे उनकी अलौकिक संतान सिद्ध होते हैं। इस प्रकार परमपिता ने 1936–37 में जगतमाता एवं जगतपिता के रूप में पवित्र प्रवृतिमार्ग की नींव डाली। साथ ही माता द्वारा साक्षात्कारों का वर्णन सुनने–सुनाने की प्रक्रिया द्वारा भक्तिमार्ग तथा भागीदार द्वारा ज्ञान समझने – समझाने की प्रक्रिया द्वारा ज्ञानमार्ग की भी नींव डाली। इस घटना के बाद परमपिता शिव का कार्यक्षेत्र एवं परिवार पहले सिंध हैदराबाद और तत्पश्चात कराची को स्थानान्तरित हुआ जहॉ पहले कुछ वर्षों तक सिंध हैदराबाद में भागीदार द्वारा और फिर कराची में माताओं के द्वारा परमपिता शिव ने ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दी। प्रारम्भ में यह परिवार ओम मंडली के नाम से जाना जाता था; क्योंकि ओम की ध्वनी लगाते ही सभी ध्यान में चले जाते थे और स्वर्ग का साक्षात्कार करते थे। संयोगवश सन् 1947–48 तक परमात्मा के अलौकिक परिवार के तीन सदस्यों – भागीदार ,माता तथा उपर्युक्त बहन का देहावसान हो गया । तत्पश्चात परमपिता शिव ने दादा लेखराज के द्वारा विश्व परिवर्तन का कार्य जारी रखा। सन् 1951 में यह परिवार पाकिस्तान से माउन्ट आबू (राजस्थान) को स्थानान्तरित हुआ। इसी दौरान ओम मंडली का नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पड़ा। यहॉ से इसने प्रसार आरम्भ किया। यहीं से परमपिता शिव ने दादा लेखराज ;उर्फ ब्रह्मा द्ध के शरीर में प्रवेश कर सन् 1951 से 18 जनवरी 1969 तक जो महावाक्य उच्चारे उन्हें 'ज्ञान मुरली' कहा जाता है। 1947 से 1965 तक ब्रह्माकुमारी ओमराधे नामक कन्या एवं दादा लेखराज ने जगदम्बा और प्रजापिता ब्रह्मा के कार्यवाहक पात्रों का अभिनय किया। 1969 में दादा लेखराज के देहावसान के बाद ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि ने इस संस्था की बागडोर सम्भाली और वर्तमान समय वे देश–विदेश में फैली इस संस्था की मुख्य संचालिका हैं।ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्यों ने समझा कि

परमपिता शिव का अब कोई साकार माध्यम नहीं है और हमें ही स्वर्ग की स्थापना करनी है।मात–पिता के रूप में परमात्म पालना के बिना इस ईश्वरीय परिवार की वही स्थिति हो गई जैसे कि लौकिक दुनियॉ में मात–पिता के देहावसान पर किसी परिवार की होती है। संस्था के सदस्यों की संख्या में तो उत्तरोत्तर वृद्धि हुई किन्तु उनकी गुणवत्ता वह नहीं थी जो संस्था के शुरुआती वर्षों में परमात्म पालना पाने वाले वत्सों की थी।जिस प्रकार बुरे व्यक्तियों के संग से मनुष्य खराब हो जाता है उसी प्रकार सदा पावन एवं कल्याणकारी शिव के साकार साथ के बिना पतित आत्माएं पावन भी नहीं बन सकतीं । अतः दादा लेखराज के देहावसान पश्चात् सृष्टि पर स्वर्ग स्थापन करने के अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए परमात्मा ने पुनः उन्हीं आत्माओं का आधार लिया जिन्हें आदि; 1936–37 द्ध में चुना था। वही भागीदार ,माता और उक्त बहन जिनके द्वारा यह परमात्म कार्य आरम्भ हुआ था और जिनका सन् 1947–48 से पहले देहावसान हो गया था,पुनः अपने अगले जन्म या शरीर में भिन्न नाम–रूप के साथ इस ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्य बनते हैं। भागीदार की आत्मा पुनः फर्रुखाबाद जिले के कम्पिला गॉव में जन्म लेती है। वह

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

बहन अहमदाबाद में ब्रह्माकुमारी बनने के बाद अफ्रिका में स्थित ब्रह्माकुमारी संस्था के सेवाकेन्द्रों की प्रभारी बनती है तथा उपर्युक्त माता पुनः दिल्ली में जन्म लेती है।
नोट – माउन्ट आबू से उच्चारित मुरलियों और अव्यक्त वाणियों के आधार पर ऐसी मान्यता आध्यात्मिक विद्यालय के सभी जिज्ञासुओं की है।

1969 में वह बहन अहमदाबाद के पालड़ी सेवाकेन्द्र में फर्रुखाबादी व्यक्ति को ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा प्रतिपादित प्राथमिक ;बेसिक द्ध ज्ञान देने के निमित्त बनती है। किन्तु वे ईश्वरीय ज्ञान सम्बन्धी उनकी शंकाओं का समाधान नहीं कर पाई। संस्था के मुख्यालय में रहने वाले वरिष्ठ भाई–बहन भी इसमें विफल रहे और उस ब्रह्माकुमारी ने शंकाओं के समाधान हेतु उन्हें उन सभी ज्ञान मुरलियों की मुद्रित प्रतियां दे दीं जो परमपिता शिव ने दादा लेखराज के द्वारा उच्चारी थीं। 1969 से ही परमपिता शिव ने उस फर्रुखाबादी के शरीर में गुप्त रूप से प्रवेश करना प्रारम्भ कर दिया था । किन्तु उसको इसका आभास न था। परमपिता की ज्ञान मुरलियों का गहन अध्ययन करते–करते उनको परमपिता शिव की प्रवेशता होने के कारण न केवल अपनी शंकाओं का समाधान मिला अपितु उनमें छिपे गुह्य रहस्य भी उनकी बुद्धि में स्पष्ट होने लगे। उन्हें 1969 के बाद परमपिता शिव के साकार पात्र ,सृष्टि के आदि,मध्य और अंत के रहस्य पर पूरा निश्चय हो गया। इसके बाद उन्होंने 1976 से इस अध्ययन के द्वारा प्राप्त ज्ञान ब्रह्माकुमार–कुमारियों को सुनाना प्रारम्भ किया। न ब्रह्माकुमारी बहनों और न ही संस्था के तथाकथित वरिष्ठ भाई ,बहनों ने उनके निष्कर्ष को स्वीकार किया और उन्हें रोकने के प्रयास जोर–शोर से शुरू कर दिये। किन्तु परमपिता शिव को तो सृष्टि पर प्रत्यक्ष होना ही था। दिल्ली में यमुना किनारे के सेवाकेन्द्रों में कुछ ब्रह्माकुमार–कुमारियों को उनके द्वारा दिए गए ज्ञान के आधार पर यह निश्चय हो गया कि यह किसी मनुष्य का सुनाया गया ज्ञान नहीं अपितु स्वयं परमपिता शिव ; इनके तन में प्रवेश कर द्ध द्वारा सुनाया गया ईश्वरीय ज्ञान है जिसके द्वारा ही विश्व का परिवर्तन होना है। इस प्रकार परमपिता के मुकर्रर रथ की अलौकिक ब्राह्मणों की दुनियॉ में सन् 1976 से दिल्ली में प्रत्यक्षता प्रारम्भ हुई । इस रथ के द्वारा दिये गये ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर ब्रह्माकुमार कुमारियॉ यह समझने लगे कि परमपिता शिव ही प्रजापिता ; शंकर द्ध का पात्र अभिनय कर रहे हैं जिन्होंने आदि ; 1936–37 द्ध में भागीदार के रूप में माता तथा दादा लेखराज की बुद्धि में ज्ञान का बीजारोपण किया था और अब अंत में फिर से अविनाशी सुख–शांति का वर्सा दे रहे हैं। साथ ही उक्त दिल्ली में जन्मी कन्या जिन्होंने 1936–37 में माता के रूप में आदि देवी या जगदम्बा या आदि ब्रह्मा का पार्ट बजाया था ,अब पुनः जगदम्बा या ब्रह्मा ;बड़ी मॉ द्ध का पार्ट बजा रही हैं। वास्तव में दादा लेखराज ;उर्फ ब्रह्मा द्ध की आत्मा ही उनमें प्रवेश कर यह पार्ट बजाती है और अंत में आदि में पार्ट बजाने वाली तीसरी बहन जो पिछले जन्म में 1942–47 के बीच में कुछ समय के लिए परमात्म परिवार की पालना ं का आधार बनी थी,अब वैष्णवी देवी के रूप में इस एडवान्स ज्ञान को सारे विश्व में फैलाने के निमित्त बनेगी तथा प्रजापिता के साथ मिलकर विनाश के पहले और बाद में भी वैष्णवी देवी या विष्णु ; अर्थात् लक्ष्मी नारायण द्ध के रूप में पालना का पार्ट बजाएगी।
इस प्रकार उपर्युक्त तीन आत्माएं ही आदि ;1936 – 37 द्ध में और अब अंत में भी ब्रह्मा,शंकर और विष्णु के रूप में निराकार परमपिता शिव के तीन दिव्य कर्तव्यों– नई दुनियॉ की स्थापना,पुरानी दुनियॉ का विनाश तथा नई दैवी दुनियॉ की पालना' के निमित बनते हैं।

सृष्टिचक्र
पुरातन काल से मनुष्य ने अपने जन्म से पूर्व और मृत्यु पश्चात् की कहानी को जानने का भरसक प्रयास किया है और कई तरह से इसे वर्णित किया है।वास्तव में परमपिता शिव के अनुसार यह

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

मनुष्य सृष्टि चक्र आत्माओं और प्रकृति का एक अद्भुत नाटक है जिसकी हर पॉच हजार वर्ष बाद पुनरावृत्ति होती है। पॉच हजार वर्ष के इस सृष्टि चक्र में प्रत्येक आत्मा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आकर यह शरीर रूपी वस्त्र धारणकर भिन्न–भिन्न भूमिका अदा करती है। इस सृष्टि रूपी नाटक को काल क्रमानुसार चार युगों में बॉटा गया है– सतयुग,त्रेतायुग,द्वापर युग तथा कलियुग। प्रत्येक युग की आयु लगभग 1250 वर्ष की होती है। सतयुग तथा त्रेतायुग को मिलाकर स्वर्ग कहा जाता है और द्वापरयुग तथा कलियुग को मिलाकर नर्क कहा जाता है। स्वर्ग तथा नर्क इसी सृष्टि पर होते हैं न कि आकाश या पाताल में ।
सतयुग तथा त्रेतायुग में इस सृष्टि पर एक धर्म,एक राज्य ,एक भाषा आदि होने तथा देह अभिमान न होने के कारण सृष्टि पर सुख,शांति तथा पवित्रता होती है। सतयुग व त्रेतायुग में आदि सनातन देवी देवता धर्म था जिसमें हर आत्मा दिव्यगुण सम्पन्न होने के कारण देवी देवता कहलाती थी। सतयुग के पहले महाराजकुमार श्रीकृष्ण और पहली महाराजकुमारी श्री राधे थे जो बड़े होकर श्री लक्ष्मी व श्री नारायण के रूप में राज्य करते हैं। जिनकी आठ गद्दियां चलती हैं। उसके बाद त्रेतायुग में श्री सीता व श्री राम का राज्य होता है जिनकी 12 गद्दियॉ चलती हैं। किंतु स्वर्ग में कृष्ण के साथ कंस या राम के साथ रावण नहीं होता। द्वापरयुग से देवता धर्म की रजोगुणी अवस्था प्रारम्भ हो जाती है। देवताएं देहअभिमान में आकर विकारी एवं दुःखी बन जाते हैं और इसीलिए भगवान को पुकारना आरम्भ करते हैं। देवताएं ; जो अब हिन्दु कहलाते हैं द्ध शिवलिंग तथा अन्य देवताओं की पूजा प्रारम्भ कर देते हैं। चूंकि वे उसी समय अचानक सम्पूर्ण पतित तथा दुःखी नहीं बनते हैं इसीलिए परमात्मा स्वयं उन्हें पावन बनाने नहीं आते हैं अपितु उनके स्थान पर कुछ शक्तिशाली आत्माएं आती हैं जो यथाशक्ति सृष्टि पर शांति स्थापन करती हैं किंतु पूरी तरह सफल नहीं होतीं । सर्वप्रथम ; अर्थात् आज से 2500 वर्ष पूर्व द्ध इब्राहिम की आत्मा आकर इस्लाम धर्म की स्थापना करती है। इसके 250 वर्ष के पश्चात् बुद्ध की आत्मा बौद्ध धर्म की स्थापना करती है। इसके 250 वर्ष पश्चात् ; अर्थात् आज से 2000 वर्ष पहले द्ध ईसा मसीह की आत्मा आकर ईसाई धर्म की स्थापना करती है।

उपर्युक्त तीन धर्म द्वापर युग में ही स्थापन होते हैं किंतु कलियुग में इन चार प्रमुख धर्मों से ही अनेकानेक धर्म,मठ,पंथ आदि स्थापन हो जाते हैं जैसे सन्यास धर्म,मुस्लिम धर्म,सिक्ख धर्म,आर्य समाज,नास्तिकवाद आदि। कलियुग आते– आते देवता धर्म;उर्फ हिन्दु धर्मद्ध की तमोप्रधान अवस्था हो जाती है। इसी प्रकार हर धर्म की प्रत्येक आत्मा भी सृष्टि पर जन्म से लेकर कलियुग अन्त तक सतोप्रधान ,सतोसामान्य, रजो और तमोप्रधान अवस्था से गुजरती है। जब इस सृष्टि की सभी आत्मायें धर्म भ्रष्ट और कर्म भ्रष्ट बन जाती हैं तब सभी धर्म पिताओं के पिता स्वयं परमपिता परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण होता हैं जिसका वर्णन 'त्रिमूर्ति शिव ' के पाठ में किया गया है। उनके अवतरण काल सतयुग आदि और कलियुग के अंतकाल को संगमयुग कहा जाता है जबकि परमपिता शिव हम आत्माओं को उत्तम से उत्तम देवी देवता बनाने के लिए ज्ञान और राजयोग की शिक्षा प्रदान करते हैं तथा मुक्ति और जीवनमुक्ति का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार देते हैं। बाकी युगों के संक्रमण काल को भी संगम कह सकते हैं किन्तु वहां आत्माओं की गिरती कला होती है और कलियुग तथा सतयुग के संगम पर आत्माओं की चढ़ती कला होती है,इसीलिए इसे पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। भारत के प्राचीन धर्म शास्त्रों में चार युगों का तो वर्णन है किन्तु पुरुषोत्तम संगमयुग का उसमें उल्लेख नहीं है। यदि सतयुग,त्रेतायुग,द्वापरयुग तथा कलियुग की तुलना स्वर्ण,रजत,ताम्र तथा लौह से करें तो संगमयुग हीरे समान श्रेष्ठ युग है; क्योंकि स्वयं परमात्मा इस युग में सृष्टि पर अवतरित होकर आत्माओं को कौड़ी से हीरा बनाते हैं। इसके लिए वे सर्वप्रथम प्रजापिता ब्रह्मा में प्रवेश होकर आदि पिता एवं आदि माता को प्रत्यक्ष करते हैं ; जैसा कि पहले के अध्यायों में बताया गया है द्ध और उनके

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

मुख से ज्ञान सुनाकर ब्र ह्माकुमार– कुमारियों को प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण भी बनाया जाता है जो ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से ' ब्राह्मण सो देवता' बनते हैं।

इस पुरुषोत्तम संगमयुग की एक विशेषता यह हैं कि इसमें पूरे पांच हजार वर्ष की रिहर्सल या शूटिंग होती है। यह शूटिंग या रिहर्सल का कार्य सन 1936–37 से परमपिता शिव के अवतरण के पश्चात लगभग 60–70 वर्ष चलता है। जिस प्रकार 5000 वर्ष के ड्रामा में आत्मायें सतोप्रधान,सतोसामान्य ,रजोप्रधान और तमोप्रधान अवस्था से गुजरती हैं उसी प्रकार परमपिता 1936–37 से जिस अलौकिक ब्राह्मण परिवार की रचना करते हैं और जिनकी अवस्था को सतोप्रधान बनाते हैं वही लगभग 70 वर्षों में सतोप्रधान से सतोसामान्य ,सतोसामान्य से रजोप्रधान और रजोप्रधान से तमोप्रधान अवस्था तक पहुॅच जाते हैं। संगमयुग के अन्तिम समय में अर्थात् सन् 2000 से 2003–4 तक परमपिता शिव द्वारा रचे गये ब्राह्मण परिवार में कलियुगी तमोप्रधान युग की भी शूटिंग होती है। इस शूटिंग में डायरैक्ट परमात्मा के प्रति और उनके ज्ञान के प्रति संशय आने लगता है। देह अभिमान बढ़ जाने के कारण दिव्य गुणों की धारणा के स्थान पर अवगुणों का ऐसा राज्य स्थापित हो जाता है कि परमात्मा शिव के साकार रथ को ही पतित,विकारी और भ्रष्टाचारी सिद्ध करने का प्रयास किया जाने लगता है। परन्तु अंत में पुनः परमात्मा के दिव्य ज्ञान और राजयोग के द्वारा परमपिता शिव की तथा जगदम्बा–जगतपिता की प्रत्यक्षता होती है तथा सम्पूर्ण ब्राह्मणों की दुनियॉ एक सूत्र में बंध जाती है। इस प्रकार संगमयुग में ही सतयुग ,त्रेतायुग ,द्वापरयुग तथा कलियुग की नीव पड़ती है। जनसंख्या की दृष्टि से भी पूरे 5000 वर्ष के नाटक में आत्माओं के पृथ्वी पर अवतरण की नीव भी संगमयुग में ही पड़ती है। संगम पर परमपिता शिव का संदेश जिस–जिस आत्मा को जितना शीघ्र प्राप्त होता है वह 5000 वर्ष के ड्रामा में परमधाम से उतना शीघ्र आकर पहले – पहले सुख फिर अपने– अपने कर्मानुसार दुःख भोगती है। जैसे 1990 में त्रेतायुगी शूटिंग खत्म होने तक लगभग दस करोड़ आत्माओं को उनका संदेश मिल चुका था। अतः उतनी आत्मायें 5000 वर्ष के ड्रामा में त्रेतायुग के अंत तक पृथ्वी पर जन्म ले लेती हैं।

जन साधारण यह समझते हैं कि इस आश्रम का ज्ञान शास्त्रों से मेल नहीं खाता । किन्तु ऐसा नहीं है। केवल उसके गुह्यार्थ को समझने की आवश्यकता है।जैसे शास्त्रों में सतयुग की आयु,त्रेतायुग से अधिक और त्रेता की आयु, द्वापरयुग से अधिक बताई जाती है। इस संदर्भ में वैसे तो 5000वर्ष के विशाल ड्रामा में हर युग की आयु समान अर्थात् 1250वर्ष है।किन्तु संगमयुग में इन युगों की शूटिंग के दौरान हर युग की शूटिंग की अवधि अलग – अलग होती है।जैसे संगमयुग में वास्तविक सतयुगी शूटिंग में 16 वर्ष की अवधि,त्रेता की शूटिंग में 12 वर्ष की अवधि से अधिक है और त्रेता की शूटिंग की अवधि ,8वर्ष की द्वापरयुगी शूटिंग की अवधि से अधिक है। इसी प्रकार गीता जैसे शास्त्रों में हर युग में परमपिता के अवतरित होने की जो बात कही गई है वह वास्तव में संगमयुग में ही चार युगों की शूटिंग के अंत में उनके प्रत्यक्षता रूपी जन्म का यादगार है। 5000 वर्ष के ड्रामा में तो परमपिता शिव हर युग में अवतार नहीं लेते ; किन्तु संगमयुग में हर युग की शूटिंग के दौरान परमपिता प्रत्यक्ष और गुप्त होते रहते हैं। कभी भागीदार के शरीर द्वारा तो कभी दादा लेखराज के शरीर द्वारा और कभी शंकर के द्वारा । इस प्रकार शास्त्रों की हर बात परमपिता शिव के ब्रह्मा द्वारा संगमयुग पर उच्चारे गए महावाक्यों से मेल जरूर रखती है।

उपयुक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि मनुष्य सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है और किस प्रकार चारों युगों की नींव संगमयुग में ही पड़ती है।

लक्ष्मी – नारायण

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

आज के समस्याओं भरे युग में मनुष्य को अपने जीवन के लक्ष्य का पता नहीं है। वैज्ञानिक आविष्कारों के चलते मनुष्य ने कल्पनातीत प्रगति की है ;लेकिन फिर भी वह सन्तुष्ट नहीं है। आधुनिक शिक्षा मानव को डाक्टर ,इंजीनियर ,वकील ,वैज्ञानिक,नेता या व्यापारी तो बना देता है किन्तु ; उसे सच्ची एवं स्थायी सुख–शान्ति की प्राप्ति नहीं करा सकती। अल्पकालिक सुख–शान्ति पाने की जल्दबाजी में मनुष्य या तो विषय विकारों में फंस जाता है या फिर भौतिक सुखों से विरक्त होकर सन्यासी बन जाता है; किन्तु सच्ची सुख–शान्ति , न तो विषय विकारों से और न ही सन्यास से प्राप्त होती है। वह तो केवल गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। इसी सच्ची सुख–शांति एवं पवित्रता से परिपूर्ण जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री लक्ष्मी और श्री नारायण एवं उनकी दिव्य रचना को ही इस चित्र में चित्रित किया गया है। दादा लेखराज द्वारा दिव्य साक्षात्कारों के आधार पर बनवाए गए चार मुख्य चित्रों में यह लक्ष्मी–नारायण का चित्र भी शामिल है।इस चित्र में वर्तमान मनुष्य जीवन के लक्ष्य अर्थात् ' नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी ' को चित्रित किया गया है।

चित्र के ऊपरी भाग में ज्योतिर्बिन्दु रचयिता परमपिता शिव एवं उनकी सूक्ष्म रचना ब्रह्मा,विष्णु एवं शंकर को दर्शाया गया है। जिनके बारे में इस पुस्तक में बता दिया गया है कि ये तीनों ही स्वर्ग की स्थापना,पालना एवं पुरानी दुनियॉ के विनाश अर्थात् परमपिता शिव के तीन दिव्य कर्तव्यों के निमित्त बनते हैं। जबकि त्रिमूर्ति के नीचे संगमयुग में लक्ष्मी–नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होने वाली आत्माओं और सतयुग में उनके दैवी सन्तान के रूप में जन्म लेने वाले श्री राधे और श्री कृष्ण को चित्रित किया गया है।चित्र के शीर्षक में स्वर्ग के रचयिता से अभिप्राय लक्ष्मी–नारायण है,न कि शिव; क्योंकि संगमयुग पर ज्योतिर्बिन्दु शिव से तो केवल ज्ञान का निराकारी वर्सा मिलता है। संगमयुग में परमात्मा के ज्ञान को सर्वाधिक धारण करने वाली दो सर्वश्रेष्ठ आत्मायें श्री लक्ष्मी एवं श्री नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होती हैं तथा विनाश के बाद जब सतयुग का आरम्भ होता है तब उनके द्वारा दादा लेखराज एवं सरस्वती की आत्माएं ही श्री कृष्ण एवं श्री राधे के रूप में जन्म लेती हैं।

चित्र के मध्य में लिखा गया है कि ' सतयुगी दैवी स्वराज्य आपका ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है ' अर्थात् जिस प्रकार विश्व के मात पिता संगमयुग पर परमपिता शिव का दिया गया ज्ञान धारण कर नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनते हैं उसी प्रकार हर मनुष्य यह ज्ञान धारण कर इसी जन्म में देवी–देवता बन सकते हैं; लेकिन इस जन्म में देवी देवता बनने का अर्थ यह नहीं कि हम चित्र में दर्शाए गए लक्ष्मी–नारायण की भांति आभूषण और वस्त्रादि प्राप्त कर लेंगे। यह आभूषणादि वास्तव में दिव्यगुणों के प्रतीक हैं। चित्र में संगमयुगी लक्ष्मी–नारायण के चारों ओर जो प्रकाश दिखाया गया है वह वास्तव में ईश्वरीय ज्ञान एवं पवित्रता की लाइट है। किन्तु सतयुग में इनके द्वारा जो आत्माएं राधे –कृष्ण के रूप में जन्म लेंगी उनके सिर के पीछे दिखाया गया लाइट का ताज केवल पवित्रता का सूचक है ;क्योंकि विनाश के बाद परमात्मा का ब्रह्मा द्वारा दिया गया सृष्टि के आदि,मध्य और अंत का ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। यहॉ एक और बात गौरतलब है कि चित्र में दर्शाए गए संगमयुगी लक्ष्मी–नारायण ,विश्व महारानी व विश्व महाराजन होंगे; क्योंकि अंततः सारे विश्वधर्मों की आत्माएं उनको अपना मात–पिता मानेंगे। किन्तु विनाश के बाद मनुष्यों का संसार केवल भारत तक सीमित रह जाएगा ; क्योंकि अन्य सभी धर्मखण्ड 2500 वर्षों के लिए समुद्र में समा जायेंगे। विनाश के बाद सतयुग में लक्ष्मी–नारायण के सन्तान के रूप में जन्म लेने वाले राधे कृष्ण केवल भारत के 9 लाख देवी देवताओं के लिए महाराजकुमार व महाराजकुमारी होंगे,सारे विश्व के लिए नहीं। हालांकि यही राधे कृष्ण बड़े होने पर लक्ष्मी नारायण का टाइटल;उपाधीद्ध धारण करेंगे परंतु वे विश्व महाराजा या विश्व महारानी नहीं

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

कहला सकते ; क्योंकि विनाश के बाद विश्व की अधिकतर आत्माएं परमधाम लौट चुकी होंगी। अतः संगमयुगी लक्ष्मी नारायण ही सच्चे लक्ष्मी–नारायण हैं। इन्हीं सत्यनारायण की कथा भारत के घर–घर में आज भी सुनी जाती है।

सतयुग में हर मनुष्य देवी देवता कहलाएगा तथा सर्वगुण सम्पन्न,16 कलासम्पूर्ण,सम्पूर्ण निर्विकारी ,मर्यादा पुरुषोत्तम एवं डबल अहिंसक होगा। जैसा कि चित्र में स्पष्ट है वहां प्रकृति ही हर प्रकार से अपने स्वामी अर्थात् देवी देवताओं की सेवा करेगी। वहां साल भर सदाबहार मौसम होगा। न हिसंक जीव जन्तुओं का डर होगा ना ही हिंसक मनुष्य का। आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र,सुन्दर और निरोगी होने के कारण न वहां डाक्टरों की जरूरत होगी न शरीर रूपी वस्त्र को सजाने के लिए किसी बाह्य साधनों की। चित्र में दिखाया गया है कि कृष्ण की दृष्टि राधे पर है और राधे की दृष्टि कृष्ण पर है। यह वास्तव में सतयुग और त्रेतायुग में देवी देवताओं के बीच अखण्ड एवं अव्यभिचारी प्रेम का प्रतीक है। वर्तमान कलियुगी वातावरण के विपरीत स्वर्ग में अव्यभिचारी प्यार होता है। अनेक देहधारियों से सम्बन्ध नहीं होता।इसकी नींव संगमयुग पर ही पड़ती है जब देवी देवता बनने वाली आत्मायें ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करने के बाद परमपिता शिव से अव्यभिचारी सम्बन्ध जोड़ते हैं। इस चित्र के मध्य में ' ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार ' की बात कही गई है अर्थात् परमपिता शिव संगमयुग पर इसी जन्म में हमें देवी देवता बनाते हैं अर्थात् आत्मा और शरीर दोनों को ही पवित्र बनाते हैं। निकट भविष्य में इस कलियुगी सृष्टि के विनाश से पूर्व ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग से आत्माएं तो पवित्र बनेंगी ही ; लेकिन विनाश के बाद देवी देवता बनने वाले जो मनुष्य बचेंगे उनके शरीर भी उसी प्रकार कंचन काया वाले बन जाएंगे जिस प्रकार सर्प एक खाल छोड़ कर दूसरी खाल धारण करता है।

अतः अब जबकि संगमयुग के हीरे तुल्य समय में परमपिता शिव ,प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं तो हमारा कर्तव्य हैं कि हम भी घर गृहस्थ में रहते हुए ' नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी' बनने का पुरुषार्थ करें।

कल्पवृक्ष

सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष एक अनोखा वृक्ष है ; क्योंकि अन्य वृक्षों की भांति इस वृक्ष का बीज नीचे नहीं बल्कि ऊपर की ओर है। सृष्टि रूपी वृक्ष के अविनाशी और चैतन्य बीज स्वरूप और कोई नहीं स्वयं परमपिता परमात्मा शिव हैं जो परमधामी स्टेज में रहते हैं और उनकी रचना नीचे की ओर है। निराकारी आत्माओं का बाप परमपिता शिव साकारी मनुष्यों का बाप प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा कहते हैं कि मैं इस सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष का अविनाशी बीज रूप हूँ और जैसे सामान्य बीज में वृक्ष का सार समाया होता है उसी प्रकार मुझमें इस सृष्टि रूपी वृक्ष के आदि , मध्य और अंत का ज्ञान है। जब यह वृक्ष जर्जरीभूत हो जाता है तो मैं ही आकर सत्य ज्ञान एवं राजयोग द्वारा फिर नये सिरे से इसका बीजारोपण करता हूँ या सैम्पलिंग लगाता हूँ।

चित्र में इस उल्टे कल्प वृक्ष को मात्र समझने लिए सीधे रूप में दिखाया गया है। इसमें सबसे नीचे कलियुग के अंत और सतयुग के आरम्भ का संगम दिखाया गया है। कलियुग अंत में जब यह कल्पवृक्ष जर्जरीभूत हो जाता है तो स्वयं परमपिता शिव जो इसके बीजरूप हैं वे आदि सनातन देवी देवता धर्म की सैम्पलिंग लगाने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश कर उनके मुख कमल से सृष्टि के आदि , मध्य और अंत का गीता ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते हैं। इस ज्ञान से जगदम्बा और मुखवंशावली पवित्र ब्राह्मणों की रचना होती है जिन्हें प्रजापिता ब्रह्माकुमार–ब्रह्माकुमारियॉ या शिवशक्ति पांडव भी कहते हैं। कल्प के अंत में परमपिता शिव के इस अवतरण समय को ही पुरुषोत्तम संगमयुग या गीता युग कहते हैं। संगमयुग के बाद सतयुग और

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

उसके पश्चात त्रेतायुग का आरम्भ होता है जिसको भारत के इतिहास का स्वर्णयुग और रजतयुग कहा जा सकता है ; क्योंकि प्रत्येक मनुष्य देवी–देवता होता है। जैसा कि सृष्टिचक्र के अध्याय में बताया गया है कि सतयुग में सूर्यवंशी लक्ष्मी–नारायण एवं उनके वंशजों का तथा त्रेतायुग में चंद्रवंशी सीता–राम एवं उनके वंशजों का अटल , अखंड , निर्विघ्न , सुख–शांतिमय राज्य चलता है। वहॉ केवल एक धर्म होता है – आदि सनातन देवी–देवता धर्म जो कि किसी प्रकार के बाह्य आडम्बरों से रहित दिव्य गुण सम्पन्न जीवन जीने का एक मार्ग था। आज की परिस्थिति के विपरीत वहॉ धर्म और राज्य का अलग–अलग अस्तित्व नहीं था। दोनों सत्तायें (अर्थात् धर्म और राज्य) लक्ष्मी–नारायण , सीता–राम के हाथों में ही थी। इसीलिये न वहॉ मंत्री की आवश्यकता थी , न राजगुरू की , न न्यायाधीश की और न सेनापति की। न वहॉ डॉक्टर थे और न वकील ; क्योंकि वहॉ विकारों का नाम–निशान नहीं था। स्वर्ग में केवल एक राज्य , एक धर्म , एक मत , एक भाषा और एक कुल था और यह स्वर्ग केवल भारत में ही था या दूसरे शब्द में भारत ही विश्व था ; क्योंकि अन्य भूखंड समुद्र में समाये हुए थे। उस भारत को ही वैकुण्ठ , बहिश्त या हैविन कहा जाता है। कल्पवृक्ष की इस अवधि को उसकी आदि कहा जा सकता है।

इसके पश्चात जब आत्माभिमानी देवतायें देहभान में आकर वाममार्ग की ओर प्रस्थान करते हैं अर्थात् विकारी बन जाते हैं तब द्वापरयुग या कल्पवृक्ष का मध्य भाग आरम्भ होता है। देवतायें कर्मभ्रष्ट और धर्मभ्रष्ट हो जाते हैं। देवी–देवता धर्म के रचयिता को भूले हुये यह भारतवासी 'हिंदू' कहलाने लगते हैं। ऐसे समय पर परमधाम से एक धर्मपिता इब्राहिम की आत्मा किसी मनुष्य में प्रवेश कर इस्लाम धर्म की स्थापना करती है । किंतु पवित्रता को मान्यता न देने के कारण इस धर्म के अनुयायियों को पश्चिम की ओर पलायन करना पड़ता है। जहॉ द्वापरयुग के प्रारम्भ के साथ ही इस्लामी धर्मखंड अरब देश समुद्र से ऊपर आ चुका होता है। इब्राहिम के बाद कई धर्मगुरू (प्रोफेट) हुये जिनमें से एक ईसा मसीह (जीसस क्राइस्ट) ने आज से दो हजार वर्ष पूर्व इसाई (क्रिश्चियन) धर्म की स्थापना की । वास्तव में क्राइस्ट की आत्मा भी इब्राहिम की भॉति परमधाम से आकर किसी मनुष्य(जीसिस) में प्रवेश कर अपने धर्म की स्थापना करती है। यह धर्म यूरोप में विकसित होता है। जिसे क्रिश्चियन धर्म खंड कह सकते हैं। इधर भारत में द्वापरयुग के प्रारम्भिक 250 वर्ष के बाद परमधाम से महात्मा बुद्ध की आत्मा आकर सिद्धार्थ नामक राजकुमार में प्रवेश कर बौद्ध धर्म की स्थापना करती है। हालांकि यह धर्म प्रारम्भ में भारत में विकसित होता है ; किंतु जल्द ही यहॉ उसका पतन हो जाता है और इसका विकास भारत के उत्तरपूर्व में स्थित देशों में होता है जिसे बौद्धी धर्मखंड कह सकते हैं। द्वापरयुग के अंतिम भाग में अर्थात् ईसा पश्चात् छठी शताब्दी में भारत में धार्मिक अशांति या कलह–क्लेश को मिटाने के लिए परमधाम से एक धर्मपिता का आगमन होता है। वह वास्तव में शंकराचार्य की आत्मा ही थी जो एक 8 वर्षीय बालक के तन में प्रवेश कर सन्यास धर्म की स्थापना करती है।हालांकि उनके पहले भी बौद्ध भिक्षु घरबार छोड़ मठों में रहते थे ; किंतु वहॉ भिक्षु और भिक्षुणियॉ एक साथ रहते थे। इसीलिये उन्हें पूर्ण सन्यासी नहीं कहेंगे।

इसके पश्चात् कल्पवृक्ष के अंतिम भाग अर्थात् कलियुग का प्रारम्भ होता है जहॉ अल्प अवधि में अनेक धर्मों एवं मत–मतान्तरों की स्थापना होती है और इसके फलस्वरूप मनुष्यात्मायें आस्तिक से लगभग नास्तिक बनने लग जाती हैं। कलियुग के प्रारम्भ में जहॉ एक ओर अरब देशों में हजरत मोहम्मद द्वारा मुस्लिम धर्म की स्थापना होती है। उसके मुकाबले भारत में (आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व) गुरूनानक द्वारा सिक्ख धर्म की स्थापना होती है। कलियुग के अंतिम 200/300 वर्षों में एक ओर भारत में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा आर्य समाज नामक धर्म की स्थापना होती है तो दूसरी ओर रूस में लेनिन द्वारा नास्तिक धर्म या साम्यवाद की स्थापना होती है। हालांकि लेनिन से पूर्व भी साम्यवादी विचारधारा का प्रारम्भ हुआ था ; किंतु वास्तव में सर्वप्रथम जनसत्ता केवल लेनिन

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

को ही मिली जिन्होंने रूस में राजाई का अंत कर दिया थाँअतः वे ही नास्तिक धर्म के वास्तविक संस्थापक हैं।
इसके अलावा कलियुग में कई छोटे2 मत–मतांतरों,

मठों आदि की स्थापना हुई। द्वापरयुग से अनेक धर्मों के चक्रों में फिरते–फिरते मनुष्यात्मायें कलाहीन , गुणहीन और लगभग नास्तिक बन जाती हैं तब कलियुग के अंतिम समय में स्वयं परमपिता शिव एक साधारण मनुष्य के तन में आकर मनुष्य सृष्टि से हर धर्म की चुनी हुई आत्माओं को एकत्र करके उन्हें राजयोग सिखाकर एक माला में पिरोते हैं। परमात्मा कहते हैं कि मैं ही आकर द्वापरयुग से अत्याचार सहती आ रही भारत की माताओं और कन्याओं को ज्ञान अमृत का कलश देता हूँ। भारत की इन्हीं शक्तियों या ज्ञान गंगाओं तथा उनके युगल मणकों को वैजयंती माला के रूप में चित्र में दर्शाया गया है। इस माला में लाल फूल कें रूप में स्वयं परमपिता शिव हैं तथा प्रथम युगल मणके हैं इस सृष्टि के मात–पिता अर्थात् जगदम्बा और प्रजापिता या जगतपिता (जो अभी सृष्टि पर कार्य कर रहे हैं) इस माला में नास्तिक धर्म को छोड़कर नौ मुख्य धर्मों की मुख्य आत्मायें हैं जो परमात्मा के कार्य में विशेष सहयोगी बनती हैं। इसीलिए उन धर्मों के अनुयायी किसी और बाह्याडम्बरों को लेकर आपस में क्यों न लड़ें पर हरेक यह माला जरूर जपते हैं। चूँकि नास्तिक धर्म न आत्मा , न परमात्मा और न परमात्म ज्ञान को मानते हैं। इसीलिए उन्हें इस माला में कोई स्थान नहीं मिलता।

जहॉ देवी–देवता सनातन धर्म की नींव स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा रखते हैं वहीं अन्य धर्मों की नींव देहधारी धर्मपितायें रखते हैं। चूँकि परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि के रचयिता हैं अतः वे देवी–देवता धर्म की नींव रखने के लिए सभी मनुष्यों में श्रेष्ठ प्रजापिता का आधार लेते हैं। बाकी धर्मपितायें अपनी–अपनी शक्ति के अनुसार नम्बरवार मनुष्यों का आधार लेते हैं। धर्म स्थापन करने के बाद हर धर्मपिता एवं उनकी आधारमूर्त आत्मा अपने–अपने धर्म में ही पुनर्जन्म लेती रहती है और संगमयुग प्रारम्भ होते ही हर धर्म की आधारमूर्त आत्मा तो परमपिता शिव से ज्ञान प्राप्त कर ब्राह्मण आत्मा बन जाती है। किंतु उन धर्मों के धर्मपितायें संगमयुग कें अंत में इन आधारमूर्त आत्माओं के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर उनको पहचानते और शक्ति प्राप्त करते हैं और जब संगमयुग में हर धर्म की आधारमूर्त आत्मायें हैं तो जरूर उनको जन्म देने वाली बीजरूपी आत्मायें भी होती हैं ; क्योंकि जड़ों से भी शक्तिशाली होते हैं बीज। संगमयुग में जो ब्राह्मण आत्माएं दादा लेखराज (नामधारी ब्रह्मा) द्वारा सुनाये गये बेसिक ज्ञान को ही सर्वोपरि मानते हैं और धारण करते हैं, वे हैं आधारमूर्त आत्माएं और जो बेसिक ज्ञान के साथ–साथ प्रजापिता द्वारा सुनाये गये गुह्य ज्ञान (एडवांस ज्ञान) को भी पहले–पहले समझते और धारण करते हैं , वे हैं बीजरूपी आत्मायें । इस प्रकार कल्पवृक्ष का यह चित्र एक अनूठा चित्र है जो अपने आप में विश्व के सभी धर्मों के इतिहास को समाये हुये है जिसे पहचानकर मनुष्यात्माओं को परमात्मा से मुक्ति–जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है।

सीढ़ी

ज्ञानियों , महात्माओं और दार्शनिकों ने पुरातन समय से ही मनुष्य के जन्म से पूर्व और मृत्यु के बाद के रहस्यों को जानने का बहुत प्रयास किया है। चूँकि इस्लाम और क्रिश्चियन धर्मों में आत्मा के पूर्व जन्म को मान्यता नहीं दी गई है। इसीलिए उन धर्मखण्डों के साहित्य या धार्मिक पुस्तकों में इस विषय पर कोई चर्चा नहीं की गई है ; किंतु भारत में पूर्वजन्म की मान्यता सदियों से रही है। इसीलिये इससे सम्बंधित ग्रंथों या पुस्तकों की कोई कमी नहीं है ; किंतु केवल एक भूल के कारण

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

भारतवासी अपने स्वर्णिम इतिहास और विश्व की अनेक सभ्यताओं और धर्मों के उद्‌भव एवं विकास में अपने योगदान को भूल गये हैं। वह भूल है देह अभिमान के कारण यह समझना कि आत्मा 84 लाख योनियों में जन्म लेती है। फिर भी भगवान के अवतरण एवं मनुष्यों के पूर्वजन्म को मान्यता देने के कारण ही भारत आज परमपिता शिव की कर्मभूमि बना है। परमपिता शिव ही आकर मनुष्य आत्माओं को उनके अनेक जन्मों की कहानी सुनाते हैं। चूँकि वे ही जन्म–मरण के चक्र से न्यारे हैं और त्रिकालदर्शी हैं। परमपिता शिव ही आकर सबसे पहले इस भ्रम को मिटाते हैं कि मनुष्यात्मा अपने कर्मानुसार मनुष्य के रूप में ही पुनर्जन्म लेती है न कि पशु–पक्षियों के रूप में। चूँकि भारत ही सारे विश्व की सभ्यताओं , संस्कृतियों और धर्मों का उद्‌गम स्थल है इसीलिये वो परमपिता शिव आकर पहले भारत के उत्थान और पतन की ही कहानी सुनाते हैं। परमपिता शिव भगवानुवाच है कि मनुष्यात्मा इस 5000 वर्ष के ड्रामा में या सृष्टि चक्र में अधिक से अधिक 84 जन्म लेती है न कि 84 लाख योनियों में भ्रमण करती है जैसा कि इस पुस्तक के आरम्भ में स्पष्ट किया गया है। अब भारत कौन है?क्या समुद्र एवं हिमालय से घिरे इस भूखंड को ही भारत कहेंगे?नहीं। भारत तो वास्तव में यह श्रेष्ठातिश्रेष्ठ आत्मा (या परम आत्मा) है जो कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। भारत माता है तो जरूर पिता भी होना चाहिए ; क्योंकि भारत में तो केवल युगल रूप का गायन व पूजन होता है। यही भारत माता एवं पिता 5000 वर्ष के इस नाटक के आरम्भ में लक्ष्मी–नारायण थे। अतः इस चित्र में सृष्टि के मात–पिता और उनके साथ हम बच्चों के

श्रीकृष्ण एवं श्रीराधे , महाराजकुमार एवं महाराजकुमारी के रूप में (संगमयुगी लक्ष्मी–नारायण के बच्चे) यहॉ सतयुग के आदि में जन्म लेते हैं और बड़े होने पर स्वयंवर के बाद उन्हें भी लक्ष्मी–नारायण की उपाधि मिल जाती है। इस प्रकार संगमयुगी लक्ष्मी–नारायण के अलावा सतयुग में ल.ना. की आठ गद्‌दियॉ (पीढ़ियॉ)

चलती हैं जो सूर्यवंशी कहलाते हैं ; किंतु वहॉ कृष्ण के साथ न तो कंस होता है, न ही भागवत में वर्णित चरित्र और न ही महाभारत का युद्ध घटित होता है ; क्योंकि भगवान शिव द्वारा स्थापित स्वर्ग में दुःख–अशांति का नामोनिशान नहीं होता। वास्तव में यह सभी कथायें सूक्ष्म रूप में संगमयुग में घटती हैं और द्वापरयुग में कथाओं के रूप में मार्गदर्शन हेतु ऋषियों द्वारा लिखी जाती हैं। सतयुग के अंतिम ल.ना. की सन्तानों को राज्य करने का प्रारब्ध प्राप्त नहीं होता ; क्योंकि उन्होंने संगमयुग में पूरा पुरुषार्थ नहीं किया था। अतः राज्य की बागडोर श्री सीता–राम नामक देवताओं के हाथ में आ जाती है जिसके साथ ही त्रेतायुग एवं चंद्रवंश का प्रारम्भ होता है। त्रेतायुग में देवतायें 12 जन्म लेते हैं। इसीलिये यहॉ श्री सीता–राम की 12 गद्‌दियॉ चलती हैं। जैसे सतयुग में कृष्ण के साथ कंस नहीं होता है , उसी प्रकार राम के साथ रावण भी नहीं होता। भागवत और महाभारत की भॉति रामायण की घटनायें भी सूक्ष्म रूप में संगम पर घटती हैं जो बाद में रामायण की कथा के रूप में द्वापरयुग में लिखी जाती है। रावणराज्य अर्थात् पॉच विकारों का राज्य तो द्वापरयुग में आरम्भ होता है। त्रेतायुग के आदि में भारत की जनसंख्या लगभग दो करोड़ होती है और त्रेतायुग के अंत तक 9–10 करोड़ तक पहुँच जाती है। त्रेतायुग के आरम्भ में देवतायें 14 कला सम्पूर्ण होते हैं ; लेकिन 12 जन्म लेते–लेते 6 कलायें और घट जाती हैं। यह कलायें वास्तव में आत्मिक स्थिति की विभिन्न अवस्थायें हैं जो चंद्रमा की भॉति सतयुग से कलियुग तक घटती और सिर्फ संगमयुग के शूटिंग काल में बढ़ती हैं। त्रेतायुग भी 1250 वर्ष का होता है ; किंतु यहॉ सतयुग की तुलना में 4 जन्म अधिक लेने के कारण उसके अनुपात में आयु एवं सुख भी कम होता है। सतयुग एवं त्रेतायुग को मिलाकर रामराज्य कहा जाता है ; क्योंकि जो आत्मायें स्वर्णिम संगमयुग पर लक्ष्मी–नारायण के रूप में प्रत्यक्ष होती हैं वही आत्माएं त्रेतायुग में प्रथम सीता–राम का भी पार्ट बजाती हैं।

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

त्रेतायुग के अंत में जब आत्मा में केवल 8 कलायें रह जाती हैं तब सभी आत्मायें कुछ न कुछ देहाभिमान में आ जाते हैं। इसी के साथ स्वर्ग की अवधि समाप्त होकर रावण राज्य या नर्क का समय या द्वापरयुग प्रारम्भ होता है। द्वापरयुग भी 1250 वर्ष का होता है जिसमें आत्मायें 21 जन्म लेती हैं। देहाभिमान में आते ही देवतायें साधारण मनुष्य बन जाते हैं और काम , क्रोधादि पंच विकारों के वशीभूत होकर दुःख एवं अशांति के दलदल में फॅस जाते हैं। द्वापरयुग से अधिकतर कर्म विकर्म होते हैं ; क्योंकि देहाभिमान में कर्म किये जाते हैं। इस प्रकार द्वापरयुग से कर्मबंधनों का एक सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है जो संगमयुग के अंत में समाप्त होता है। द्वापरयुग से पाप कर्मों के

कारण दुःखी मनुष्य शांति और सुख के लिए भगवान का आश्रय लेते हैं। सनातन धर्म की आत्मायें सर्वप्रथम मंदिरों का निर्माण कर शिवलिंग के रूप में उनकी अव्यभिचारी पूजा प्रारम्भ करते हैं जिन्होंने उन्हें संगमयुग पर देवी देवता बनाया था। द्वापरयुग के आरम्भ में राजा विक्रमादित्य द्वारा निर्मित सोमनाथ मंदिर इसका साक्षी है। वैसे संसार भर में खुदाइयों में द्वापरयुगीन शिवलिंग या शंकर की नग्न मूर्तियॉ पाई गई हैं। बाद में भारतवासी अपने ही पवित्र रूप अर्थात् सतयुगी देवी देवताओं की पूजा करना प्रारम्भ करते हैं। सर्वप्रथम श्रीलक्ष्मी नारायण के मंदिर तथा तत्पश्चात श्रीसीता एवं श्रीराम के मंदिर बनवाये जाते हैं। जैसा कि चित्र में स्पष्ट है कि देवताओं की युगल रूप में पूजा करने वाले ताजधारी हैं जबकि कृष्ण की सिंगल पूजा करने वालों को ताज नसीब नहीं होता। इससे भारत में माता के रूप में देवी को न दिया जाने वाला सम्मान एवं उसका परिणाम स्पष्ट होता है। द्वापरयुग के प्रारम्भ में कुछ ही समय बाद भारत में ऋषियों द्वारा शास्त्रों की रचना का कार्य प्रारम्भ होता है। जैसे वेद , उपनिषद ,रामायण , महाभारत , भगवद्गीता आदि। जैसा कि कल्पवृक्ष के चित्र में बताया गया है कि द्वापरयुग से अन्य धर्मों की स्थापना भी प्रारम्भ हो जाती है ; चूॅकि इस चित्र में भारत के 84 जन्मों की कहानी का ही चित्रण है इसीलिए यहॉ अन्य धर्मों के उद्भव और विकास की चर्चा नहीं की जा रही है। द्वापरयुग से ही भारत में विदेशी आक्रमणकारियों का आगमन और भारत पर उनका दुष्प्रभाव आरम्भ हो जाता है। सबसे पहले तो भारतवासी अपने धर्म का नाम ही भूल जाते हैं और विदेशियों द्वारा दिया गया नाम 'हिंदु धर्म' ही प्रचलित हो जाता है। कलियुग का प्रारम्भ होते ही हिंदु धर्म में भक्ति भी व्यभिचारी बनने लगती है अर्थात् एक शिव की भक्ति से आरम्भ होकर अब वह हजारों , करोड़ों देवी–देवताओं की पूजा में परिवर्तित हो जाती है। पशु योनियों के रूप में देवताओं की भक्ति तथा पेड़–पौधों एवं जड़ वस्तुओं की पूजा भी प्रचलित हो जाती है। यहॉ तक कि पंच तत्वों के बने देहधारियों की भी पूजा प्रारम्भ हो जाती है। व्यभिचारी भक्ति के साथ अंधविश्वास , कुरीतियॉ और अर्थहीन , रीति–रस्म , रिवाज भी भारतीय समाज में व्याप्त हो जाते हैं। देवी–देवताओं की भव्य पूजा कर उन्हें पानी में डुबो देना भी अर्थहीन रिवाजों का ही एक उदाहरण है। भारत में धर्म के पतन के साथ ही मनुष्यों के चरित्र का पतन भी कलियुग अंत तक चरम सीमा पर पहुॅच जाता है। अधिकतर मनुष्य धर्मभ्रष्ट , कर्मभ्रष्ट और नास्तिक बन जाते हैं। धर्मसत्ता और राज्यसत्ता दोनों का ही पतन हो जाता है। कलियुग में मनुष्यात्माएं 42 जन्म लेती हैं। इसीलिए एक ओर जहॉ जनसंख्या बढ़ती है तो दूसरी ओर आयु कम हो जाती है। रोग , शोक एवं अशांति बढ़ जाती है। किसी समय सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत अन्य देशों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थानों से आर्थिक सहायता

मॉगने की स्थिति तक पहुॅच गया है। खास भारत एवं आम विश्व के इस पतन को जब वेद , शास्त्र , गुरू या धर्मपितायें नहीं रोक पाते तब परमपिता शिव को विश्व का उद्धार करने के लिए भारत भूमि पर अवतरित होना पड़ता है। 5000 वर्ष के इस ड्रामा के अंत में भगवान एक साधारण वृद्ध मानव के तन में प्रवेशकर गीता ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा से भारत को स्वर्ग बनाते हैं जहॉ भगवान को पहचानकर पवित्र बनने वाली विश्व की श्रेष्ठ आत्मायें एकत्रित होती हैं। उनके अवतरण

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

का यह समय संगमयुग कहलाता है जिसके अंत में विनाश के पश्चात भारत के अलावा सभी धर्मखंड 2500 वर्षों के लिए समुद्र में समा जाते हैं। महाविनाश के बाद अधिकतर आत्माएं सजायें खाकर पवित्र होकर परमपिता शिव के साथ परमधाम लौट जाती हैं ; किंतु कुछ श्रेष्ठ आत्मायें भारत खंड में बच जाती हैं जो कि देवताई सृष्टि का आरम्भ करती हैं। यह बीजरूप 9,16,108 आत्मायें पूरे 84 जन्म लेती हैं ; परंतु उसके बाद जो आत्माएं परमधाम से उतरकर आती हैं वे कालक्रमानुसार कम जन्म लेती हैं।

भारत के आध्यात्मिक पतन के साथ–साथ विश्व का भी पतन होता है ; किंतु भारत की तुलना में विदेशी उतना अधिक दुःखी तथा पतित नहीं बनते हैं ; क्योंकि उनका पार्ट इस सृष्टि द्वापरयुग से प्रारम्भ होता है। भारतवासी सतयुग में जितने श्रेष्ठ और पावन बनते हैं कलियुग अंत तक उतने ही अधिक भ्रष्ट तथा पतित बन जाते हैं। इसीलिए कलियुग अंत में जब महाविनाश होगा तब विदेशी तो अणु बमों की विध्वंसकारी शक्ति के चलते अधिक दुःख अनुभव किये बिना कुछ क्षणों में शरीर छोड़ देंगे ; किंतु भारतवासी , जिनके पापों का खाता अधिक है , वे लम्बे समय तक दुःख–दर्द एवं पश्चाताप का अनुभव करते हुए प्राकृतिक आपदाओं एवं गृह युद्ध द्वारा पापों को विशेष रूप से मिटाकर परमधाम लौटेंगे ; परंतु विनाश की इस विभीषिका के बीच परमपिता शिव का अलौकिक परिवार अतिन्द्रिय सुख–शांति का उसी प्रकार अनुभव करेगा जैसे कि भक्त प्रहलाद की कथा में प्रसिद्ध है। जो आत्माएं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच को समझकर पवित्र बनेंगे वे पुनः मनुष्य से देवता बनेंगे और भारत में स्वर्ग का शुभारम्भ करेंगे ; किंतु जो जानकर भी अनजान रहेंगे और पापों का बोझ नहीं मिटायेंगे वे अणु युद्ध , पारम्पारिक युद्ध ,विश्व युद्ध , प्राकृतिक आपदाओं एवं धर्मयुद्धों के द्वारा पापों का विनाश कर उनके साथ परमधाम लौटेंगे तथा अपने समय पर पुनः अगले कल्प में अपना पार्ट बजाने आयेंगे। इस प्रकार भारत के 84 जन्मों के इस कहानी की हर 5000 वर्ष बाद पुनरावृत्ति होती रहती है।

सहज राजयोग

संसार में अनेक प्रकार के योग प्रसिद्ध हैं। जैसे भक्तियोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग,हठयोग, राजयोग आदि। किंतु योग के इन सभी प्रकारों में सहज राजयोग श्रेष्ठातिश्रेष्ठ है। योग का अर्थ है सम्बंध या मिलन। आजकल योग का तात्पर्य योगासन या हठयोग समझ लिया जाता है ; किन्तु योगासन से शारीरिक स्वास्थ्य और कुछ सीमा तक मानसिक स्वास्थ्य मिल सकता है ; लेकिन सम्पूर्ण सुख–शांति की प्राप्ति तो केवल राजयोग द्वारा ही हो सकती है।

राजयोग का अर्थ है राजाओं का राजा बनाने वाला योग या रहस्य भरा योग। मनुष्यात्माएं कई जन्मों से देहाभिमान के दलदल में फॅसकर विनाशी देहधारियों से योग लगाती आई हैं। किंतु जैसे बिना तॉबे के तार वाले रबड़ के दो तारों को जोड़ने से उसमें बिजली प्रवाहित नहीं होती उसी प्रकार विनाशी देहधारियों से सम्बंध रखने पर अविनाशी सुख–शांति की प्राप्ति नहीं हो सकती। परमात्मा शिव तो इसे योग भी नहीं अपितु सरल शब्द में 'याद' कहते हैं। याद करना एक स्वाभाविक, सरल एवं निरंतर प्रक्रिया है जबकि योग से किसी विशेष प्रयास का बोध होता है। जैसे परमात्मा शरीर में रहते हुए भी उसके भान से न्यारे हैं अर्थात् विदेही रहते हैं। उसी प्रकार हमें भी स्वयं को अविनाशी आत्मा (न कि प्रकृति के 5 तत्वों से बना देह) समझकर प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा को याद करना है। हमारी दृष्टि में शिव रहना चाहिए। मात्र शव अर्थात् देह नहीं रहना चाहिए। अतः भगवान को न तो सिर्फ साकार रूप में , न तो सिर्फ निराकार रूप में बल्कि साकार में प्रविष्ट निराकार को याद करना है। यही है सच्चा राजयोग। मन , वचन एवं कर्म की पवित्रता , परमात्मा से सच्चा स्नेह , दिव्य गुणों की धारणा , ईश्वरीय ज्ञान , शुद्ध अन्न तथा सच्चे ब्राह्मणों

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

का संग करने पर आत्मा देहाभिमान द्वारा उत्पन्न पॉच विकारों अर्थात् काम , क्रोध , लोभ , मोह एवं अहंकार से मुक्ति पाकर अपने मूल स्वरूप अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न स्वरूप में स्थित हो सकती है। प्रभु को याद करने के लिए अमृतवेला या ब्रह्ममुहूर्त का समय सबसे श्रेष्ठ है ; क्योंकि उस समय वातावरण शांत और शुद्ध रहता है और मन भी जाग्रत एवं प्रशांत होता है। राजयोग के नित्य अभ्यास से आत्मा में पवित्रता , शांति , धैर्य , निर्भयता , नम्रता जैसे गुणों की धारणा होती है। साथ ही आत्मा को व्यर्थ विचारों के फैलाव को समेटने की शक्ति , सहनशक्ति ,समाने की शक्ति , अच्छे–बुरे को परखने की शक्ति , सही निर्णय लेने की शक्ति , समस्याओं का सामना करने की शक्ति , विभिन्न संस्कार वाले मनुष्यों के साथ सहयोग करने की शक्ति तथा विस्तार को संकीर्ण करने आदि आत्मा की अष्ट शक्तियॉ प्राप्त होती हैं।

राजयोग के निरंतर एवं दृढ़ अभ्यास से आत्मा अपने आदि , मध्य एवं अंत की कहानी को तथा इस विश्व में अपने अद्वितीय अनेक जन्मों के पात्र को जान सकती है और अपने घर बैठे विश्व की आत्माओं को भी शांति एवं सुख का दान दे सकती है। इस प्रकार हम 'स्वपरिवर्तन के साथ–साथ विश्वपरिवर्तन' भी कर सकते हैं।

ब्रह्माकुमारी विद्यालय और आध्यात्मिक विद्यालय की शिक्षाओं में अंतर

- ब्रह्माकुमारियॉ शास्त्रों को मान्यता नहीं देती हैं। आध्यात्मिक विद्यालय ईश्वरीय वाणी के आधार पर शास्त्रों को मान्यता देता है।
- ब्रह्माकुमारियॉ कृष्ण उर्फ ब्रह्मा की सोल को ही एकमात्र गीता का साकार भगवान मानती हैं। जबकि मुख से कहती हैं कि कृष्ण गीता का भगवान नहीं है। आध्यात्मिक विद्यालय निराकारी स्टेज वाले शिव शंकर को प्रैक्टिकल में गीता का भगवान मानता है। कृष्ण उर्फ ब्रह्मा के साकार रूप , दादा लेखराज को गीता का भगवान नहीं मानता।
- ब्रह्माकुमारियॉ ब्रह्मा–विष्णु–शंकर के साकार चित्र तो छपाती हैं ; परंतु सिर्फ ब्रह्मा के ही साकार रूप को ही मान्यता देती हैं , विष्णु और शंकर को इस दुनियॉ से ही उड़ा देती हैं। जबकि शास्त्रों में ब्रह्मा के मंदिर–मूर्तियॉ और पूजा भी नहीं दिखाई है। ब्रह्माकुमारियॉ शिव–शंकर को तो अलग कहती हैं ; लेकिन यह नहीं बताती हैं कि शास्त्रों में शिव–शंकर को क्यों मिला दिया?शिव को ब्रह्मा और विष्णु के साथ क्यों नहीं मिलाया?और शंकर को ही महादेव क्यों कहा है?आध्यात्मिक विद्यालय में उपरोक्त प्रश्नों का सटीक जवाब है और तीनों देवताओं के साकार प्रैक्टिकल पार्ट की स्पष्टता भी है।
- ब्रह्माकुमारियॉ सिर्फ ब्रह्मा (ब्रह्मा+मॉ) बड़ी–मॉ को ही भगवान का साकार रूप मानती हैं और अपने को सिर्फ ब्रह्माकुमार–कुमारियॉ कहलाती हैं। आध्यात्मिक विद्यालय मॉ और बाप (प्रजापिता+ब्रह्मा =एडम और ईव) दोनों को साकार रूप में मानता है।
- ब्रह्माकुमारियॉ ज्ञान–योग का विज्ञापन करती हैं। जैसे प्रोजेक्टर , प्रदर्शनी , पब्लिक , भाषण , कॉन्फ्रेंस , मेले , सम्मेलन , रथयात्रा, मनुष्यकृत साहित्य आदि.....।
  आध्यात्मिक विद्यालय किसी प्रकार के विज्ञापन में विश्वास नहीं करता।

- ब्रह्माकुमारियॉ सिर्फ मृत्यु के बाद ही मुक्ति–जीवनमुक्ति रूपी ईश्वरीय वर्से को जीवन का लक्ष्य मानती हैं। आध्यात्मिक विद्यालय जीवन रहते ही लोक और परलोक संवारने का पुरुषार्थ कराता है अर्थात् इसी जन्म में नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनाने का परम प्रसिद्ध गीता वर्णित उपदेश देता है।

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

- ब्रह्माकुमारियॉ महल , माड़ियॉ , अटारियॉ बनाकर 36 प्रकार के भोग खाने में और सिर्फ श्वेत वस्त्र पहनने में अपने को श्रेष्ठ मानकर चलती हैं।आध्यात्मिक विद्यालय रहन, सहन,खान ,पान, पहनावे में सादगी को ही श्रेष्ठ मानकर चलता है।
- ब्रह्माकुमारियों में चंदा मॉगकर व्यक्तिगत वैभव और मान–शान बढ़ाना आम बात है। आध्यात्मिक विद्यालय किसी प्रकार के चंदा आदि मॉगने से मरना भला समझता है।
- ब्रह्माकुमारियॉ सिर्फ कहती हैं कि हम एक धर्म , एक राज्य , एक कुल, एक मत की स्थापना करेंगे ; परंतु चलन में पूरा ही विरोधाभास देखने में आता है।आध्यात्मिक विद्यालय के सदस्य प्रैक्टिकल में आये हुए एकमात्र ईश्वर की ही श्रेष्ठ मत को मानते हुए ईश्वरीय धारणाओं ,कायदे, कानून को मानने के साथ2 नम्बरवार अपने2 पुरुषार्थ अनुसार चलने का प्रयास भी करते हैं।
- समर्पित ब्रह्माकुमारियॉ प्रायः सन्यासियों की तरह मठपन्थ बनाकर जीवन चलाती हैं। आध्यात्मिक विद्यालय के समर्पित या गैर समर्पित सभी सदस्य गृहस्थी जीवन यापन करते हैं ; क्योंकि गीता का भगवान स्वयं गृहस्थी में रहते , गृहस्थी पाण्डवों को ही राजयोग सिखाता है। सन्यासियों (भीष्म , द्रोणाचार्य , कृपाचार्य.....) को नहीं सिखाता।

बाप के वर्तमान साकार पार्ट के प्रति प्रूफ एवं प्रमाण

- शंकर फिर कहॉ से आया ? उनकी रचना कहॉ है?सब आत्माओं का बाप वो ही है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा भी हो नहीं सकता है। ब्रह्मा सो विष्णु , विष्णु सो ब्रह्मा तो दो मूर्तियॉ हो गया ना। मुरली 19.8.68 पृ.3
- .बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। 50/60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं फिर साथ ले जायेंगे। मु.8.9.68 पृष्ठ 3
- .अव्यक्त रूप को व्यक्त में लाने के लिए कितना समय चाहिए ? सम्पूर्ण स्थिति को इस साकार रूप में लाने के लिए कितना समय चाहिए ? अ.वा.20.3.69 पृ. 57
- .बाप तो बच्चों के सामने ही है , दूर नहीं। दूर हुई चीज को भूल जाते हो। जो चीज सामने ही रहती है उस चीज को भूलना–यह तुम बच्चों को तो शोभा नहीं देता है। अ.वा.24.7.69 पृ.111
- .बाप तुम बच्चों को अकेला नहीं छोड़ता है। जो बाप का और तुम बच्चों का घर है , वहॉ पर साथ में ही लेकर जायेंगे। सब इकट्ठा चलने ही हैं। अ.वा.24.7.69पृ.112
- .ब्राह्मण बच्चों के साथ जो बाप का वायदा है कि साथ चलेंगे , साथ मरेंगे और साथ जियेंगे अर्थात् पार्ट समाप्त करेंगे ; ब्रह्मा बाप ने बच्चों के साथ जो कान्ट्रैक्ट विश्व परिवर्तन का उठाया हे वह आधे में छोड़ सकते हैं क्या ?
  अ.वा.30.6.74पृ.224
- .कुमारका बताओ शिवबाबा को कितने बच्चे हैं ? कोई कहते 500 करोड़ , कोई कहते एक ब्रह्मा बच्चा है। क्या शंकर बच्चा नहीं है ? तब किसका बच्चा है?यह भी गुंजाइश है। मैं कहता हूँ शिवबाबा के दो बच्चे हैं ; क्योंकि ब्रह्मा वह तो विष्णु बन जाते हैं। बाकी रहा शंकर। तो दो हुए ना। तुम शंकर को क्यों छोड़ देती हो ? भल त्रिमूर्ति कहते हैं ; परंतु आक्युपेशन अलग2 है ना। मु.16.5.77
- .साकार में सर्व ज्ञानी तू आत्माओं की नज़र इस महान स्थान (काम्पिल्य नगर) पर ही जा रही है और जायेगी। ऐसे ही यह आध्यात्मिक खजानों की प्राप्ति का स्थान जो अभी गुप्त है इसको अनुभव के नेत्र द्वारा देख ऐसे ही समझेंगे जैसे गॅवाया हुआ , खोया हुआ गुप्त खजाने का स्थान फिर से मिल गया है। तो विचित्र बाप , विचित्र लीला और विचित्र स्थान यही देख2 हर्षित होंगे। अ.वा.26.1.83

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

- .बाप भी विनाश के लिए आये हैं तो आधे पर थोड़े ही छोड़ जायेंगे। आग लगकर जब पूरी होगी तब चले जायेंगे। सभी चले जायेंगे , सबको साथ ले जायेंगे। होना तो जरूर है। मु. 13. 9.87पृ.2
- .इतने बच्चे सिवाय प्रजापिता ब्रह्मा के और किसके होते नहीं। कृष्ण को कभी प्रजापिता नहीं कहा जाता। प्र. ब्रह्मा जो होकर गये हैं वह इस समय प्रेजेंट है। मु.4.3.88पृ.1
- .फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता ? सारी दुनियॉ की जो भी आत्मायें हैं सबसे मिलते हैं। सब बच्चों की जो आशा है वह पूर्ण करते हैं। मु. 14.6.89पृ.1
- .तुम जानते हो कि राम की आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहॉ ही (ब्राह्मण दुनियॉ में) पुरुषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला है राम का तो जरूर आयेंगे। उनको नालेज लेनी पड़ेगी। रिवाइज़ मु.19.9.89पृ.1
- .त्रिमूर्ति में ब्रह्मा, विष्णु , शंकर को क्रियेट किसने किया?वास्तव में कहना चाहिए त्रिमूर्ति शिव ,न कि ब्रह्मा। अब गाते हैं देव देव महादेव। शंकर को ऊॅच रखते हैं तो त्रिमूर्ति शंकर कहो ना। फिर त्रिमूर्ति ब्रह्मा क्यों कहते ? मु.8.4.90पृ.1

- .बाप कहते हैं मैं कल्प कल्प कल्प के संगमयुगे आता हूॅ। पुरानी दुनियॉ का विनाश कराता हूॅ। जब तक नई दुनियॉ स्थापन हो जाये तब तक इस पुरानी दुनियॉ में रहना पड़े। मु.8.8.93 पृ.2
- .तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण और ब्राह्मणियॉ। वह ब्राह्मण ब्रह्मा बाप को जानते ही नहीं हैं। बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा , विष्णु , शंकर भी जरूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। मु.5.2.95 पृ.1
- .कोई भी बात सामने आती है तो कहते हैं हाय राम ; परंतु ईश्वर वा राम कौन है यह किसको पता नहीं। ब्रह्मा , विष्णु , शंकर तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिवजयंती नहीं है ; परंतु त्रिमूर्ति शिवजयंती है। मु.15.10.95 पृ.3
- .वर्तमान (राम–चरित) को भूल बीती (ब्रह्मा की बातों) को याद करती हैं इस कारण बापदादा कब प्रत्यक्ष दिखाई देते ,कब पर्दे के अंदर छिपा हुआ दिखाई देते ; लेकिन बापदादा सदा (ज्ञानी तू आत्मा) बच्चों के आगे प्रत्यक्ष है। बच्चों से छिप नहीं सकता। अ.वा.18.1.78/3.11.97 पृ.1
- .डबल विदेशी बच्चों ने अपने असली बाप को , अपने असली देश को , असली धर्म को बहुत अच्छी तरह से पहचान लिया है। ऐसे मणकों को बाप भी सदा विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने के वा विश्व के आगे बच्चों द्वारा बाप प्रत्यक्ष होने के कई दृश्य देख भी रहे हैं। अभी प्रत्यक्ष हो रहे हैं और आगे चलके भी होंगे। अ.वा.17.5.98 पृ.3

- लव–कुश की क्या–क्या बातें बैठ सुनाते हैं। गाते हैं राम राजा , राम प्रजा , (राम साहूकार है)..... .....धर्म का उपकार है। फिर यह सब बातें कहॉ से आई ? यह सब बातें समझने की हैं। मु.6.8. 98पृ.3

- रुद्र जो ज्ञान सुनाते हैं वह सुनते ही रहते हो। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो जरूर यहॉ होगा ना। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा का थोड़े ही दिन और रात बनायेंगे। वह तो सूक्ष्मवतनवासी देवता है। मु.25.9.98पृ.3
- पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्मवतनवासी को यहॉ कैसे ले आ सकता ?वह तो फरिश्ता है ना। उनको पतित दुनियॉ में ले आऊॅ –यह तो दोष हो जाये। मु 2.10.98 पृ.2

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

- शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा ? बाप तो अभी नीचे आ गया। बाबा परमधाम जाकर क्या करेंगे ? तो पहले जरूर शरीर याद आयेगा फिर आत्मा।
  मु.22.3.99पृ.2
- एडवांस पार्टी तो साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा कर रही हैं। एडवांस पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। वह जोर–शोर से अपने प्लान बना रहे हैं। वहॉ भी नामीग्रामी हैं। अ.वा.2.5.99पृ.2
- मुख्य है जगतअम्बा , जगतपिता। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहॉ है ना। ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्मवतन में तो नहीं होगी ना। स्थापना यहॉ ही होती है। मु.14.1.2000पृ.2
- शिव है निराकार बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। अब तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो। त्रिमूर्ति दिखाते हैं ; परंतु समझते नहीं। शिव को उड़ा दिया है।
  मु.14.1.2000 पृ.4
- यू.पी. वालों ने डबल लाटरी तो ली है ना। साकार और निराकार। यह भी कोई कम पार्ट है क्या ? साकार तो साकार है। अ.वा.2.4.2000
- बापदादा सोचते हैं–हॅसी की बात है कि विनाश को सोचना अर्थात् बाप को विदाई देना ; क्योंकि विनाश होगा तो बाप तो परमधाम चले जायेंगे ना। तो संगमयुग से थक गये हैं क्या?
  अ.वा.16.12.2000
- प्रत्यक्ष किसको करना है ? बच्चों को या बाप को ? बाप को भी बच्चों द्वारा करना है ; क्योंकि अगर ज्योतिर्बिंदु का साक्षात्कार भी हो जाये तो कई बिचारे ....., बिचारे हैं ना। समझेंगे ही नहीं कि यह क्या है। अ.वा.16.12.2000
- पहले–पहले तो बाप का परिचय देना है। इनमें ही सब मूँझ पड़े हैं। कृष्ण तो देहधारी है। इनको (ब्रह्मा को) दादा कहेंगे।
  मु.19.1.2001 पृ–4

- गृहस्थ धर्म वाले कहते भगवान किसी न किसी रूप में पतितों को पावन बनाने आयेंगे। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलायेंगे। टीचर घर बैठ प्रेरणा करेंगे क्या ? प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। भल शंकर की प्रेरणा द्वारा विनाश कहा जाता है.....। मु. 6.2.2001 पृ.2
- बाप को कहा जाता है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। अभी तुम बच्चों को बाप से वर्सा मिल रहा है। इसलिए तुमको प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियॉ कहा जाता है। मु.24.3.2001पृ.2
- अब सूक्ष्मवतनवासी शंकर डमरू कैसे बजायेगा ? तुम बंदरों के आगे बाबा (शंकर के रूप में राम वाला व्यक्तित्व) ज्ञान का डमरू बजा रहा है। मु.29.6.2001पृ.4
- बाबा अब बच्चों के आगे बोल रहे हैं। सम्मुख होने बिगर तो सुन नहीं सकते। दूर से भल सुनते हैं ; परंतु निश्चय नहीं होता।मु.6.10.2001 पृ.1
- अब प्यार प्रेरणा से तो होता नहीं है। वह भी इसमें प्रवेशकर बच्चों को प्यार कर सकते हैं ना। बस, बाबा तुम्हीं से खाऊॅ , तुम्हीं से सुनूॅ.....बुद्धि उस तरफ चली जाती है।
  मु 6.10.2001 पृ.2
- अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है , शिक्षक और सतगुरू तो है ही। अभी तक बाप रहमदिल है इसलिए देखते हुए भी ,सुनते हुए भी रहम कर रहा है। अ.वा.4.11.2001
- कोई तो एडवांस में भी जायेंगे। श्रीकृष्ण के मॉ–बाप भी तो एडवांस में जाने चाहिए जो फिर कृष्ण को गोद में लेंगे। यह बड़ी गुह्य बातें हैं। रिवा.मु.30 .5. 2002 पृ.3

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

- परंतु निराकार को तो रथ जरूर चाहिए ना। रथ में आये तब तो तुम उनसे मिलेंगे। तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से बैठूँ.....। अच्छा साकार बिगर निराकार को याद कर दिखाओ। क्या तुमको ज्ञान प्रेरणा से मिलेगा ? फिर मेरे पास आये ही क्यों हो ? मु.2.9.2002 पृ.3
- त्रिमूर्ति का चित्र बड़ा जरूरी है। इसमें बाप और वर्सा दोनों ही आ जाते हैं। बाप के बिगर दादे का वर्सा कैसे मिलेगा ? कृष्ण का चित्र सबको अच्छा लगता है। बाकी 84 जन्मों की लिखत अच्छी नहीं लगती। मु.17.10.2002 पृ.2
- बाप को नहीं भूलेंगे तो वरसे को भी नहीं भूलेंगे। इस समय तो बाबा हाजिर–नाजिर है। कहते भी हैं हाजिरा हजूर.....वह भी गुप्त है। आत्मा शरीर में आकर बोलती है मुझे भी शरीर चाहिए। नहीं तो आऊँ कैसे ? मु.22.11.2002 पृ.3

- साकार के साथ स्नेह है तो जल्दी–जल्दी इस पुरानी दुनियॉ से चलने की तैयारी करो। अ.वा.28.5.69पृ 74

शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है ; लेकिन शक्तियॉ ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है। अ.वा.9.10.71

- एक ही यह ब्राह्मण जन्म है जो परमपिता परमात्मा द्वारा डायरैक्ट जन्म होता है। देवता जन्म भी श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा ही होता है , परमात्मा द्वारा नहीं। अ.वा.13.6.73पृ.68
- इसलिए घबराओ मत ! बैकबोन बापदादा सामना करने के लिए किसी भी व्यक्त तन द्वारा समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं। अ.वा.16.1.75पृ.314
- अंतिम प्रत्यक्षता के समय की सीन क्या होगी ? एक ओर विनाश की आग लगेगी,दूसरी ओर..... .....। बाप भी वापस चले जायेंगे। मु.13.9.87पृ.1
- जब विनाश शुरू हो जायेगा फिर समझेंगे जरूर कहीं भगवान गुप्त वेश में है। मु.15.8.92 पृ.2
- जैसे फर्रुखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं। निराकार शिवबाबा तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके। मु.11.1.93 पृ.2
- बाप देख रहे हैं कि बच्चे मेरे साथी हैं ; लेकिन बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। फिर ढूँढने में समय गॅवाते हैं। हाजिर–हुजूर को भी छिपा देते। अ.वा.3.11.97
- ज्ञान सूर्य साकार सृष्टि पर उदय हुआ है , यह बात अभी गुप्त है। मु.10.5.98पृ.2
- अब शंकर कौन हुआ?यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन ? इस पर रुह रुहान करना। रुहानी सोशल वर्कर ग्रुप अभी पर्दे के अंदर है। अ.वा.17.5.98 पृ.2
- ब्रह्मा–विष्णु–शंकर है सूक्ष्मवतनवासी। बाप पहले सूक्ष्म शरीर रचते हैं। यह ब्रह्मा,विष्णु,शंकर भी अपना पार्ट बजाए फिर वापस चले जायेंगे। मु 20.5.98
- यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा जरूर साकर में होना चाहिए ,जिस द्वारा परमपिता परमात्मा सृष्टि रचते हैं। मु 2.10.98
- अभी सेवा का अच्छा चान्स आरहे हैं। साकार और निराकार दोनों को प्रत्यक्ष्य करने का समय समीप आ रहा है।अंवा 27.1.2000
- वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होनी चाहिए ।मु 17.1.00
- तो एडभान्स पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि मातायें पक्की थी। साकार बाप की पालना लेने वाली,पालना तो देंगी ना। अं वा 25.11.00
- बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा द्वारा आकर आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करता हूं। यहॉ की करेंगे ना,सूक्ष्मवतन में तो नहीं करेंगे। मु 17.1.01

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/

- शिव जयन्ती भी मनाते हैं। अब निराकार की जयन्ती कैसे हो सकती। मु 13.6.2001
- सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे,प्रजापिता यहॉ है। मु 17.4.02
- बरोबर सतयुग–त्रेता नई दुनियॉ थी जो राम ने स्थापन की। राम से भी शिवबाबा अक्षर ठीक है। मु 28.5.02
- गरीब निवाज ,पतित–पावन बाप ही गाया हुआ है। अब प्रैक्टिकल में पार्ट बजारहे हैं। मु 21.11. 2002
- तो माता–पिता को फालो करना चाहिए। मात–पिता तो साकार में चाहिए। मु 22.11.2002

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय मुख्यालय – 5/26ए,
सिकत्तरबाग,जिला–फर्रुखाबाद–209625,यू.पी फोन – 05692.228930

शाखाएँ –

- ग्राम–कम्पिला,जि.–फर्रुखाबाद–207505,यू.पी
  फोन– 05690, 271202
- ए–1,351–352,विजयविहार,रिठाला,दिल्ली–110085
  फोन नं – 011,27044227
- हाउस नं –634,केशोराम काम्पलेक्स,सेक्टर–45सी,
  सुख गैस के बाजू में,पो–बुड़ैल,चण्डीगढ़–160106,
  फोन नं–0172,2622829
- आध्यात्मिक कृषि फार्म –
  आसरेवालीरोड,ग्रा.पो–बिल्ला,जि.–पंचकुला;हरियाणाद्ध,
  फोन नं –01733,258211
- सी.एल–249,सेक्टर–2,साल्टलेक सिटि,कलकत्ता–700091 फोन नं –033,23590918
- पाटील हाउस,आजाद चौक,खारीगॉव,ता.–कलवा,
  जि.–ठाणे,मुम्बई–400605 फोन–022,25396765
- 29/3 त्ण्ज,प्रकाशनगर,बेगमपेट,हैदराबाद–500016, फोन नं – 040,55316710
- साई दुर्गा लोरी वॉटर सर्विस,तणुकू रोड,ताडेपल्लीगुडम,जि.–वेस्ट गोदावरी–534102,आन्ध्रा, फोन – 08818,227029
- शिवज्योतिनिलयम,138फर्स्टमेन, उदय नगर,पो.–दूरवाणीनगर,बैंगलूर–560016,
  फोन नं – 080,8518330

email: a1spiritual@sify.com, inforpoint@gmail.com

http://kailashproject4.wordpress.com/